कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 15 से 21 सितम्बर 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-17 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

नकली बीज पर कसेगा शिकंजा, पारंपरिक बीजों पर नहीं लगेगा पंजीकरण का बोझ : श्री चौहान

नए बीज कानून पर केन्द्रीय कृषि मंत्री की किसान संगठनों से चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रस्तावित नए सीड बिल को लेकर देशभर के किसान संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ कृषि भवन में चर्चा की। करीब 20 किसान संगठनों ने बैठक में अपने सुझाव और जमीनी अनुभव साझा किए।

श्री चौहान ने कहा कि मौजूदा बीज अधिनियम 1966 का है और बीज नियंत्रण आदेश 1983 में लागू हुआ था। समय के साथ कृषि क्षेत्र में बड़े बदलाव आए हैं और अब बीजों की क्वालिटी और नकली बीजों की समस्या से निपटने के लिए मौजूदा व्यवस्था को मजबूत करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि खराब बीज के लिए जिम्मेदारी तय करने की व्यवस्था प्रभावी नहीं होने के कारण किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है।

श्री चौहान ने बताया कि देश में इस्तेमाल होने वाले करीब 70 फीसदी बीज मौजूदा बीज कानून के दायरे से बाहर हैं। राज्यों में बीजों के नियंत्रण और निगरानी की प्रक्रियाएं भी अलग-अलग हैं। ऐसे में नए कानून के जरिए व्यवस्था को ज्यादा प्रभावी बनाने और नकली और घटिया बीजों पर सख्ती से अंकुश लगाने की जरूरत है। सरकार ने नवंबर-दिसंबर 2025 में प्रस्तावित सीड बिल के मसौदे पर सार्वजनिक सुझाव मांगे थे। उस दौरान किसानों और किसान संगठनों की ओर से करीब 18 हजार सुझाव मिले थे। शिवराज सिंह ने कहा कि इन सुझावों का अध्ययन किया गया है, लेकिन किसान संगठनों से सीधे बातचीत इसलिए जरूरी समझी गई, ताकि किसानों के बीच काम करने वाले संगठनों के अनुभवों को भी कानून में शामिल किया जा सके। श्री चौहान ने साफ किया कि सीड बिल को लेकर सरकार कोई जल्दबाजी नहीं करेगी। किसान संगठनों, किसानों और दूसरे हितधारकों से मिलने वाले सुझावों पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अभी कानून को अंतिम रूप देने के लिए कोई समय सीमा तय नहीं की गई है और सुझावों का सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रस्तावित कानून में किसानों के अधिकारों की पूरी सुरक्षा की जाएगी। किसान अपने पारंपरिक और कृषक किस्मों के बीजों का इस्तेमाल करने के साथ उन्हें आपस में साझा और बेच सकेंगे। ऐसे बीजों के लिए पंजीकरण अनिवार्य नहीं होगा।

बैठक में भारतीय किसान संघ, बीकेयू के विभिन्न घटक, अखिल भारतीय किसान समन्वय समिति, किसान महापंचायत, भारतीय कृषक समाज सहित कई किसान संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए. कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, बिहार, तमिलनाडु, झारखंड और केरल समेत कई राज्यों से आए किसान प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे।

सूखे इलाकों में आय बढ़ाने की जरूरत

कम पानी में ज्यादा उत्पादन बढ़ाने पर जोर

नई दिल्ली। देश में पानी की कमी और बदलते मौसम के बीच सूखे इलाकों की खेती को मजबूत करना जरूरी हो गया है। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि ऐसे क्षेत्रों में कम पानी में ज्यादा उत्पादन और किसानों की आय बढ़ाने वाली खेती को बढ़ावा देना होगा। उन्होंने कहा कि भारत के करीब 65 फीसदी भूभाग में ड्राईलैंड यानी कम पानी वाले क्षेत्र हैं। इसलिए

विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए इन क्षेत्रों की कृषि उत्पादकता बढ़ाना जरूरी है। शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में आयोजित ग्लोबल ड्राईलैंड कांग्रेस 2026 में यह बात कही। उन्होंने कहा कि सूखे इलाके सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया के कई देशों, खासकर अफ्रीकी देशों में भी बड़ी मात्रा में हैं। इन क्षेत्रों में खेती के लिए पानी की उपलब्धता बड़ी चुनौती है।

श्री चौहान ने कहा कि ड्राईलैंड खेती में ऐसी तकनीक और पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे कम पानी में अच्छी पैदावार मिल सके।

खरीफ सीजन में खाद की कोई कमी नहीं

यूरिया से लेकर डीएपी तक पर्याप्त स्टॉक उपलब्ध

नई दिल्ली। देशभर में खरीफ फसलों की बुवाई और फसल प्रबंधन का काम जारी है। ऐसे समय में किसानों के लिए सबसे महत्वपूर्ण जरूरत खाद की उपलब्धता होती है। केंद्र सरकार ने खरीफ 2026 सीजन के लिए उर्वरकों की उपलब्धता से जुड़े ताजा आंकड़े जारी किए हैं। सरकार के अनुसार देश में प्रमुख उर्वरकों का पर्याप्त भंडार मौजूद है और किसानों को खाद की कमी को लेकर चिंता करने

की जरूरत नहीं है।

सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के देश में यूरिया, डीएपी, एमओपी, एनपीके और एसएसपी समेत सभी प्रमुख उर्वरकों की उपलब्धता मांग से अधिक बनी हुई है। कुल मिलाकर खरीफ 2026 सीजन के लिए 383.92 लाख मीट्रिक टन उर्वरकों की जरूरत आंकी गई है, जबकि उपलब्धता 426.21 लाख मीट्रिक टन दर्ज की गई है।

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक किसानों के लिए सबसे अधिक उपयोग होने वाले उर्वरक यूरिया की उपलब्धता 211.96 लाख मीट्रिक टन रही।

आलू व शकरकंद अनुसंधान में वैश्विक नेतृत्व की ओर भारत: श्री चौहान

आगरा का सीसार्क केंद्र बनेगा नवाचार का हब, किसानों को मिलेगी उन्नत तकनीक और नई किस्मों का लाभ

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत कृषि अनुसंधान, खाद्य सुरक्षा और पोषण के क्षेत्र में वैश्विक भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र के साथ सहयोग से भारत ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया और पूरी दुनिया के किसानों को लाभ पहुंचाया जा सकता है।

श्री चौहान ने कृषि भवन में अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र के महानिदेशक डॉ. सिमोन हेक के नेतृत्व में आए प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। बैठक में आगरा में स्थापित हो रहे सीसार्क केंद्र की प्रगति, आधुनिक ब्रीडिंग तकनीक, उन्नत जर्मप्लाज्म और किसानों की आय बढ़ाने से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई।

श्री चौहान ने कहा कि आईसीएआर और अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र के कार्यों में दोहराव नहीं होना चाहिए। आगरा केंद्र के माध्यम से नए जर्मप्लाज्म और आधुनिक तकनीक भारत में लाकर स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप उन्नत किस्में विकसित की जानी चाहिए, ताकि किसानों को सीधा लाभ मिले। अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र महानिदेशक डॉ. सिमोन हेक ने बताया कि सीसार्क भारत सहित नेपाल, बांग्लादेश और भूटान के लिए प्रमुख वैज्ञानिक केंद्र के रूप में काम करेगा। यहां हाइब्रिड आलू, बायोफोर्टिफाइड फसलों और जलवायु-सहिष्णु किस्मों पर कार्य किया जाएगा। बैठक में शकरकंद को 'सुपरफूड' के रूप में बढ़ावा देने पर भी जोर दिया गया। आयरन, जिंक और विटामिन-ए से भरपूर ऑरेंज-फ्लेश्ड बायोफोर्टिफाइड शकरकंद की उन्नत किस्मों को किसानों तक पहुंचाने पर सहमति बनी। इससे किसानों की आय बढ़ाने के साथ पोषण सुरक्षा को भी मजबूती मिलने की उम्मीद है।

किसानों तक तकनीक पहुंचाने को मजबूत होंगे केवीके

राज्यों की भागीदारी पर केन्द्रीय कृषि मंत्री का जोर

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यों की भागीदारी बढ़ाकर कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) को मजबूत करने की कार्ययोजना की समीक्षा की। बैठक में मार्च 2027 तक प्राथमिकता वाले 300 केवीके के बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक्स के उन्नयन तथा दिसंबर 2028 तक सभी केवीके में इनक्यूबेशन-सह-कौशल केंद्र स्थापित करने पर जोर दिया गया।

बैठक में केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव एवं आईसीएआर महानिदेशक डॉ. मंगी लाल जाट सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा और छत्तीसगढ़ ने केवीके उन्नयन के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की है, जबकि अन्य राज्यों में कार्ययोजना तैयार करने और क्रियान्वयन की प्रक्रिया जारी है।

इनक्यूबेशन-सह-कौशल केंद्रों के माध्यम से केवीके को कृषि आधारित उद्यमों, तकनीकी संस्थानों और जिला-विशिष्ट कृषि अवसरों से जोड़ा जाएगा। इसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं और किसानों को कौशल, नवाचार एवं उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराना है। बैठक में केवीके कर्मचारियों के वेतन, भत्ते और पदोन्नति संबंधी सुधारों, पर्याप्त मानव संसाधन, एनपीएस एवं सेवानिवृत्ति लाभ तथा समय पर वित्तीय सहायता पर भी चर्चा हुई। मौसमी कृषि कार्यक्रमों के लिए समय पर धनराशि जारी करने और गुणवत्तापूर्ण बीज-किस्मों की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर राज्यों से सहयोग का आग्रह किया गया। 2026-27 में दलहन-तिलहन कार्यक्रम के तहत 24 राज्यों के 353 केवीके/जिलों में 12,349 हेक्टेयर लक्ष्य के मुकाबले 9,750 हेक्टेयर क्षेत्र में गतिविधियां पूरी हो चुकी हैं।

श्री चौहान ने कहा कि मजबूत केंद्र-राज्य अभिसरण, आधुनिक बुनियादी ढांचा, पर्याप्त जनशक्ति और जिला-विशिष्ट कार्ययोजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से केवीके किसानों तक वैज्ञानिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक, उन्नत किस्में, कौशल और उद्यमिता के अवसर पहुंचाने के प्रभावी केंद्र बनेंगे। बैठक में प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना (पीएम-डीडीकेवाई) के प्रभावी क्रियान्वयन में भी केवीके की सक्रिय भूमिका पर जोर दिया गया।

खाद्य सुरक्षा, जलवायु-लचीली कृषि और डिजिटल नवाचार पर भारत-आसियान ने बढ़ाया सहयोग

9वीं आसियान-भारत कृषि एवं वानिकी मंत्रिस्तरीय बैठक आयोजित

नई दिल्ली। कृषि एवं वानिकी पर 9वीं आसियान-भारत मंत्रिस्तरीय बैठक नई दिल्ली में आयोजित हुई। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान और फिलीपींस के कृषि विभाग के सचिव फ्रांसिस्को पी. टियू लॉरेल की सह-अध्यक्षता में हुई बैठक में खाद्य सुरक्षा तथा सतत और जलवायु-लचीली कृषि व्यवस्था विकसित करने के लिए सहयोग मजबूत करने पर जोर दिया गया। बैठक में आसियान-भारत कृषि एवं वानिकी सहयोग योजना 2026-2030 को आगे बढ़ाने पर सहमति बनी। इसके तहत नीतिगत संवाद, डिजिटल कृषि, तकनीकी सहयोग, संयुक्त अनुसंधान, क्षमता निर्माण और किसानों के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया जाएगा।

मंत्रियों ने जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कृषि, कम उत्सर्जन वाली धान खेती, जल उत्पादकता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित डिजिटल कृषि, मृदा स्वास्थ्य, फसल कटाई के बाद प्रबंधन, कृषि वानिकी और मजबूत मूल्य श्रृंखलाओं को सहयोग के प्रमुख क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया। कृषि नवाचारों को किसानों तक पहुंचाने के लिए अनुसंधान संस्थानों, तकनीकी विशेषज्ञों, निजी क्षेत्र और किसानों के बीच बेहतर समन्वय पर भी बल दिया गया। बैठक में जलवायु परिवर्तन, चरम मौसम, इनपुट एवं बाजार अस्थिरता, व्यापार व्यवधान तथा सीमा पार कीट एवं रोगों जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता जताई गई। इस अवसर पर 'भारत-आसियान कृषि और वानिकी मैत्री स्पाइक' का अनावरण भी किया गया, जो दोनों पक्षों की दीर्घकालिक साझेदारी का प्रतीक है। प्रतिनिधिमंडल ने आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा का दौरा कर संरक्षित खेती केंद्र, बाजरा एवं धान के खेत, नानाजी देशमुख फेनोमिक्स सुविधा तथा आईसीएआर-एनबीपीजीआर के जीन बैंक का अवलोकन किया। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व डीएआरई के सचिव एवं आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट ने किया।

खरीफ फसलों की बुआई में मामूली बदलाव, दलहन का रकबा बढ़ा

नई दिल्ली। खरीफ सीजन में धान, श्री अन्न एवं मोटे अनाज, तिलहन, गन्ना और कपास के बुआई क्षेत्र में पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में मामूली कमी दर्ज की गई है, जबकि दलहन तथा जूट-मेस्ता के रकबे में वृद्धि हुई है। धान की बुआई इस वर्ष करीब 421.82 लाख हेक्टेयर में हुई, जो पिछले वर्ष के 438.19 लाख हेक्टेयर से 16.37 लाख हेक्टेयर कम है। कर्नाटक, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में प्रमुख गिरावट दर्ज की गई। दलहन का रकबा 117.13 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष से 1.84 लाख हेक्टेयर अधिक है। उत्तर प्रदेश, झारखंड, तेलंगाना, राजस्थान और मध्य प्रदेश में वृद्धि दर्ज की गई। श्री अन्न एवं मोटे अनाज का क्षेत्रफल 181.39 लाख हेक्टेयर, तिलहन का 191.99 लाख हेक्टेयर, गन्ने का 58.47 लाख हेक्टेयर और कपास का 109.17 लाख हेक्टेयर दर्ज किया गया। इन सभी फसलों के रकबे में पिछले वर्ष की तुलना में मामूली कमी रही। वहीं जूट एवं मेस्ता का क्षेत्रफल 6.34 लाख हेक्टेयर रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 0.10 लाख हेक्टेयर अधिक है। बिहार और पश्चिम बंगाल में इसका रकबा बढ़ा है।

पहाड़ी क्षेत्रों में पशुधन निगरानी में एआई की नई पहल

पशु स्वास्थ्य और प्रजनन प्रबंधन में मिलेगी मदद

नई दिल्ली। नागालैंड स्थित आईसीएआर-राष्ट्रीय मिथुन अनुसंधान केंद्र के शोधकर्ताओं ने मिथुन के व्यवहार की रियल-टाइम पहचान और निगरानी के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित प्रणाली विकसित की है। यह तकनीक पशु स्वास्थ्य, कल्याण, नस्ल सुधार और प्रजनन प्रबंधन में उपयोगी साबित हो सकती है।

शोध के तहत फार्म में 12 हाई-डेफिनिशन सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से दिन-रात मिथुन की गतिविधियों की निगरानी की गई। एआई प्रणाली में भोजन करना, खड़े रहना, बैठना और माउंटिंग जैसे प्रमुख व्यवहारों की पहचान एवं ट्रैकिंग की गई। शोधकर्ताओं के अनुसार पशुओं के खाने, बैठने और खड़े होने के व्यवहार में बदलाव से स्वास्थ्य एवं शारीरिक स्थिति के शुरुआती संकेत मिल सकते हैं, जबकि माउंटिंग व्यवहार प्रजनन और एस्ट्रस प्रबंधन में सहायक हो सकता है। वैज्ञानिकों का लक्ष्य भविष्य में एआई के माध्यम से बीमारी के कारण सुस्ती, आक्रामकता और शरीर की सफाई जैसे अन्य व्यवहारों की पहचान करना है। विभिन्न फार्मों और मौसमों में इसके व्यापक परीक्षण की भी आवश्यकता बताई गई है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार ईंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रेक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

साप्ताहिक सुविचार

कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य को दास नहीं बनाता, केवल धन का लालच ही दास बनाता है। – पंचतंत्र

पराली प्रबंधन से बदलेगी खेती

कृषक दूत सम्पादकीय

देश भर में इस समय पराली प्रबंधन सरकार एवं किसानों के लिए गंभीर चुनौती बन गया है। जहां पर धान की खेती होती है उन राज्यों में पराली प्रबंधन सबसे गंभीर समस्या बन गया है। पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़ के बाद अब मध्यप्रदेश भी पराली प्रबंधन को लेकर चिंतित है। राज्य सरकार ने बाकायदा विज्ञापन जारी करके पराली प्रबंधन के लिये किसानों से अपील की है। मध्यप्रदेश में पिछले चार-पांच साल से धान का रकबा बढ़ा है। वर्तमान में 38 लाख हेक्टेयर में किसानों द्वारा खरीफ मौसम में धान की खेती की जा रही है। जो धान के सामान्य क्षेत्र का लगभग दो गुना अधिक है। धान उत्पादक किसानों के लिये धान की पराली का प्रबंधन चुनौतीपूर्ण कार्य है। जबसे धान फसल की कटाई कंबाइन हार्वेस्टर से होने लगी है यह समस्या और बढ़ गई है। हार्वेस्टर से धान की कटाई के पश्चात खेत में पड़े फसल अवशेष का प्रबंधन किसानों के लिये सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है। पराली का निष्पादन आसानी से नहीं होने के कारण किसान उसमें आग लगा देते हैं जो सबसे अधिक नुकसान दायक है। पराली को आग के हवाले करने से खेत में मौजूद मित्र कीटों का सर्वनाश हो जाता है। साथ ही मिट्टी की सतह कठोर हो जाती है जो अगली फसल के लिये सबसे अधिक नुकसान दायक है।

पराली का बेहतर प्रबंधन किसान एवं कृषि दोनों के लिये फायदेमंद है। धान, मक्का एवं तिल फसल की पराली खेतों में न जलाते हुए इसका बेहतर प्रबंधन सभी के हित में होगा। पराली को कम्पोस्ट बनाकर खेतों में खाद के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। धान के फसल अवशेष को बारीक टुकड़ों में काटकर पशु चारे के लिये संरक्षित किया जा सकता है। हाल ही में धान की पराली से ईंधन गैस का नवाचार भी किया गया है जो भविष्य के लिये अत्यधिक उपयोगी साबित हो सकता है। पराली प्रबंधन के लिये काम आने वाले कृषि यंत्रों पर अनुदान देकर इनकी पहुंच किसानों तक होनी चाहिए। पराली प्रबंधन में काम आने वाले कृषि यंत्र महंगे होने से लघु एवं सीमांत किसानों की पहुंच से दूर हैं। स्थानीय स्तर पर इन कृषि यंत्रों के निर्माण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। ताकि आसानी से किसान इन कृषि यंत्रों को खरीद सकें। फसल अवशेष प्रबंधन पूरे देश की समस्या है। इसमें जन-जागरुकता चलाकर इसे प्राकृतिक खेती से जोड़कर जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है। पराली का बेहतर प्रबंधन भविष्य एवं वर्तमान दोनों के लिये फायदेमंद साबित होगा।

ग्रामीण युवाओं ने सीखी तना एवं कलम से नए पौधे तैयार करने की तकनीक

मंदसौर। कृषि विज्ञान केंद्र, मंदसौर द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से नर्सरी प्रबंधन विषय पर 8 दिवसीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य युवाओं को फल, सब्जी, फूल एवं शोभायमान पौधों की उन्नत पौध तैयार करने की तकनीकों से परिचित कराकर उन्हें स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाना था।

इस अवसर पर केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. जी.एस. चुंडावत ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि नर्सरी प्रबंधन एवं पौध उत्पादन की उन्नत तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर युवा स्वयं की नर्सरी स्थापित कर स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। उन्होंने नर्सरी एवं उद्यानिकी फसलों में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोगों की पहचान तथा उनके प्रबंधन के संबंध में भी जानकारी प्रदान की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्र के उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. निखिल गुप्ता के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। प्रतिभागियों को फल, सब्जी, फूल एवं शोभायमान पौधों की उन्नत पौध तैयार करने की विभिन्न विधियों का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। सब्जियों की पौध तैयार करने की विभिन्न तकनीकों, जैसे खुले वातावरण में पौध उत्पादन तथा शेडनेट हाउस, पॉलीहाउस एवं लो-टनल पॉलीहाउस जैसी संरक्षित परिस्थितियों में प्रो-ट्रे के माध्यम से स्वस्थ, रोग एवं कीटमुक्त पौध तैयार करने की तकनीक के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। इसके साथ ही फलों की गुणवत्तापूर्ण एवं उन्नत पौध तैयार करने की विभिन्न विधियों का प्रशिक्षण दिया गया। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. राजेश गुप्ता द्वारा ड्रिप सिंचाई के महत्व एवं उसके उचित प्रबंधन तथा तकनीकी अधिकारी संतोष पटेल द्वारा उद्यानिकी फसलों में जल-विलेय उर्वरकों के महत्व एवं उपयोग की तकनीक की जानकारी दी गई। सुरेंद्र सिंह धाकड़, वरिष्ठ उद्यानिकी विकास अधिकारी ने उद्यानिकी विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं एवं उनका लाभ लेने की प्रक्रिया के संबंध में प्रतिभागियों को अवगत कराया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मंदसौर जिले के 15 ग्रामों से आए 18 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

जेएनकेवीवी में पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण दिया संदेश

जबलपुर। भारतीय सोसायटी ऑफ सॉइल साइंस के जबलपुर चैप्टर तथा मृदा विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर परिसर में पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया।

इस अवसर पर चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. ब्रजेश दीक्षित ने कहा कि वृक्ष हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। स्वच्छ पर्यावरण और पृथ्वी पर पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए पौधरोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने उपस्थित लोगों से पौधे लगाने के साथ-साथ उनकी सुरक्षा और देखभाल का संकल्प लेने का भी आह्वान किया। भारतीय सोसायटी ऑफ सॉइल साइंस के राष्ट्रीय काउंसिलर डॉ. बी.एस. द्विवेदी ने कहा कि पेड़-पौधे धरती के अमूल्य आभूषण हैं। यदि पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना है तो व्यापक स्तर पर पौधरोपण करना होगा। उन्होंने नागरिकों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनके संरक्षण के लिए प्रेरित करने की अपील की। इस अवसर पर सोसायटी के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक पौधरोपण किया तथा युवाओं को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाने का संदेश दिया। कार्यक्रम में डॉ. ऋषिकेश ठाकुर, डॉ. अनिल मिश्रा, डॉ. ए.एन. गौतम, डॉ. किरण पटेल सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी, सोसायटी के सदस्य तथा मृदा विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

शून्य ब्याज पर फसल ऋण, 12 माह में चुकाने की सुविधा

विदिशा। राज्य सरकार ने वर्ष 2026-27 में किसानों के लिए शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर अल्पावधि फसल ऋण योजना जारी रखने का निर्णय लिया है। इसके तहत सहकारी बैंकों से किसानों को खरीफ और रबी फसलों के लिए फसल ऋण मिलेगा। नई व्यवस्था में खरीफ और रबी के लिए अलग-अलग समय सीमा के बजाय वार्षिक एकल ऋण सीमा तय की गई है। किसान द्वारा लिए गए ऋण की देय तिथि अब पहली बार ऋण लेने की तारीख से 12 माह होगी। नए किसान क्रेडिट कार्ड के लिए ऑनलाइन आवेदन की सुविधा भी दी गई है।

अनमोल वचन

रामायण मनुष्य जाति को अनिर्वचनीय सुख और शांति पहुंचाने का साधन है। – मदनमोहन मालवीय

पाक्षिक व्रत एवं त्योहार

भाद्र पक्ष शुक्ल / अश्विन कृष्ण विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
15 सितंबर 26	मंगलवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 4	गणेशोत्सव प्रारंभ
16 सितंबर 26	बुधवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 5	
17 सितंबर 26	गुरुवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 6	संतान साते व्रत
18 सितंबर 26	शुक्रवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 7	
19 सितंबर 26	शनिवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 8	
20 सितंबर 26	रविवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 9	
21 सितंबर 26	सोमवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 10	
22 सितंबर 26	मंगलवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 11	डोल ग्यारस
23 सितंबर 26	बुधवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 12	पंचक 9.13
24 सितंबर 26	गुरुवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 13	पंचक, प्रदोष व्रत
25 सितंबर 26	शुक्रवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 14	पंचक
26 सितंबर 26	शनिवार	भाद्र पक्ष शुक्ल 15	पंचक
27 सितंबर 26	रविवार	आश्विन कृष्ण 1,	पंचक, श्राद्ध पक्ष शुरू
28 सितंबर 26	सोमवार	आश्विन कृष्ण 2,	पंचक 11.39

सोयाबीन में समन्वित कीट प्रबंधन

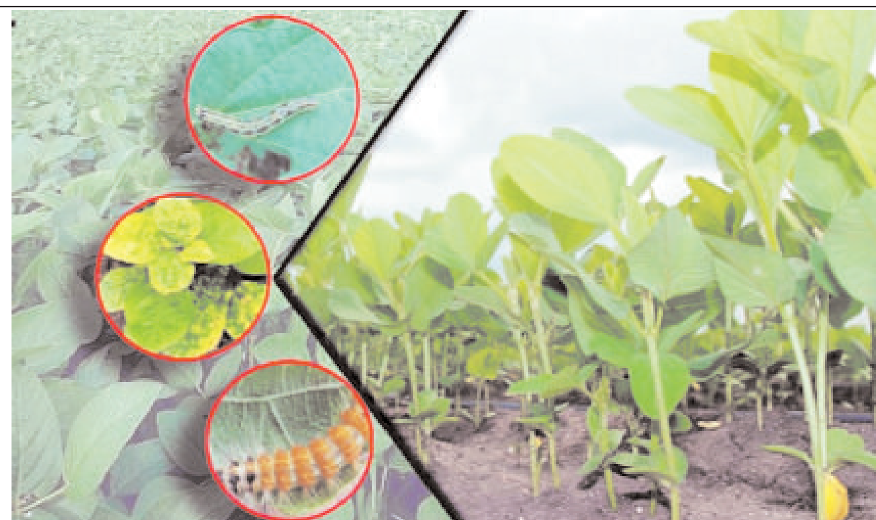

- **डॉ. मुकेश कुमार बंकोलिया,** वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (पौध संरक्षण)
- **डॉ. ओ.पी. भारती,** वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- **डॉ. संध्या मुरे,** वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा (म.प्र.)

मानसून पर आधारित हरदा जिले की खरीफ की प्रमुख फसल सोयाबीन है। मध्य प्रदेश को देश में सोयाबीन के प्रमुख उत्पादक राज्यों में अग्रणी होने के कारण 'सोयाबीन प्रदेश' के नाम से भी जाना जाता है। भारत में सोयाबीन के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में मध्य प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान है।

सोयाबीन में प्रोटीन एवं तेल की मात्रा अधिक होने के कारण इसका उपयोग विभिन्न घरेलू एवं औद्योगिक कार्यों में किया जाता है। गेहूं एवं मक्का के आटे में लगभग 10 प्रतिशत सोयाबीन का आटा मिलाकर चपाती बनाने से उसकी पौष्टिकता एवं प्रोटीन की मात्रा में वृद्धि होती है। सोयाबीन की खली एवं भूसा पशुओं तथा मुर्गियों के लिए पौष्टिक आहार के रूप में उपयोग किए जाते हैं। सोयाबीन की खली का उपयोग खेत में जैविक खाद/उर्वरक के रूप में भी किया जा सकता है।

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर ने मध्य प्रदेश में सोयाबीन के क्षेत्र विस्तार, उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने तथा उन्नतशील किस्मों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सोयाबीन की फसल में विभिन्न कीट एवं रोग समय-समय पर गंभीर क्षति पहुँचाते हैं, जिससे उत्पादन एवं गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रमुख कीटों में तना मक्खी, चक्रभृंग, तंबाकू की इल्ली, बिहार रोमिल इल्ली, सेमीलूपर, सफेद मक्खी तथा चने की इल्ली प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न रोग भी फसल की वृद्धि एवं उत्पादन को प्रभावित करते हैं। कीट एवं रोगों से होने वाली क्षति को कम करने के लिए केवल रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भर रहना उचित नहीं है। वर्तमान परिस्थितियों में एकीकृत कीट प्रबंधन को अपनाना अत्यंत आवश्यक है। इसके अंतर्गत स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग, बीजोपचार, समय पर बुवाई, उचित पौध संख्या एवं संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, खेत की नियमित निगरानी, फेरोमोन ट्रैप एवं पीले चिपचिपे प्रपंचों का उपयोग, पक्षी बैठने के स्थानों की व्यवस्थाए जैविक नियंत्रण तथा आवश्यकता होने पर अनुशंसित कीटनाशकों का उचित मात्रा एवं सही समय पर प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस प्रकार एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन अपनाकर सोयाबीन में कीट एवं रोगों से होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है, उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है तथा कीटनाशकों के अनावश्यक उपयोग एवं लागत को भी कम किया जा सकता है।

सोयाबीन के प्रमुख हानिकारक कीट एवं समेकित कीट प्रबंधन

सोयाबीन फसल पर अनेक प्रकार के कीट आकर्षित होते पाए गए हैं, किंतु इनमें से केवल 9-10 प्रमुख कीट ही सामान्यत: आर्थिक स्तर पर फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। इनमें तना मक्खी, गर्डल बीटल, चक्रभृंग, सेमीलूपर, तंबाकू की इल्ली, बिहार की बालदार इल्ली तथा फलियों को नुकसान पहुँचाने वाली विभिन्न इल्लियाँ प्रमुख हैं। पिछले कुछ वर्षों में सोयाबीन फसल में चना की इल्ली का प्रकोप भी लगातार देखने को मिल रहा है। यदि इन हानिकारक कीटों का उचित समय परए उचित तकनीक एवं अनुशंसित उपायों द्वारा प्रबंधन नहीं किया जाए तो फसल की उपज में 30-50 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। अत: कीटों से होने वाले नुकसान को कम करने तथा कीटनाशकों के अनावश्यक एवं अत्यधिक उपयोग से बचने के लिए समेकित कीट प्रबंधन तकनीक अपनाना आवश्यक है। इससे कीटों का प्रभावी नियंत्रण करने के साथ-साथ उत्पादन लागत, कीटनाशक अवशेष एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को भी कम किया जा सकता है।

सोयाबीन में समन्वित कीट प्रबंधन

अन्य फसलों की तरह सोयाबीन फसल में भी हानिकारक कीटों के साथ-साथ अनेक मित्र एवं लाभदायक कीट पाए जाते हैं। ये मित्र कीट प्राकृतिक रूप से हानिकारक कीटों का शिकार कर उनकी संख्या को नियंत्रित करते हैं, जिससे खेत में प्राकृतिक संतुलन बना रहता है और कीटों का प्रकोप आर्थिक क्षति स्तर से नीचे बनाए रखने में सहायता मिलती है।

रासायनिक कीटनाशकों के अनावश्यक, अंधाधुंध एवं बार-बार उपयोग से हानिकारक कीटों के साथ.साथ मित्र कीट भी नष्ट हो जाते हैं। इससे प्राकृतिक शत्रुओं की संख्या में कमी आती है और कई बार कीटों के पुन: प्रकोपए कीटनाशक प्रतिरोध तथा उत्पादन लागत में वृद्धि जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

अत: सोयाबीन में कीट नियंत्रण के लिए केवल रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भर न रहते हुए समन्वित कीट प्रबंधन की तकनीक अपनाना अत्यंत आवश्यक है। इसमें खेत की नियमित निगरानीए आर्थिक क्षति स्तर के आधार पर कीट नियंत्रण, यांत्रिक एवं जैविक विधियों का उपयोग, मित्र कीटों का संरक्षण तथा आवश्यकता होने पर ही अनुशंसित एवं चयनात्मक कीटनाशकों का उचित मात्रा में प्रयोग किया जाता है। इससे कीटों का प्रभावी नियंत्रण करने के साथ-साथ मित्र कीटों का संरक्षणए पर्यावरण की सुरक्षा और उत्पादन लागत में कमी सुनिश्चित की जा सकती है।

समन्वित कीट प्रबंधन के विभिन्न घटक

सोयाबीन फसल में कीटों के प्रभावी एवं पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन के लिए समन्वित कीट प्रबंधन के विभिन्न घटकों को अपनाना आवश्यक है। इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं।

- **ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई:** कीटों के अंडेए लार्वा एवं प्यूपा को नष्ट करने तथा उनकी संख्या कम करने के लिए ग्रीष्मकाल में गहरी जुताई करें।
- **उचित किस्म का चयन:** क्षेत्र के लिए अनुशंसित एवं कीट-रोग सहनशील किस्मों का चयन करें।
- **संतुलित पोषण:** मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। नत्रजन की अधिक मात्रा से बचें।
- **उचित बीज दर एवं स्वस्थ बीज का उपयोग:** अनुशंसित बीज दर का पालन करें तथा स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।
- **कीटग्रसित पौधों को नष्ट करना:** प्रारंभिक अवस्था में कीटग्रसित पौधों एवं कीटों से प्रभावित पौधों के भागों को खेत से निकालकर नष्ट करें, ताकि कीटों का प्रसार रोका जा सके।
- **प्रकाश प्रपंच का उपयोग:** रात्रिचर कीटों की निगरानी एवं संख्या कम करने के लिए प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें।
- **जैविक कीटनाशकों का प्रयोग:** पर्यावरण एवं मित्र कीटों की सुरक्षा के लिए जैविक कीटनाशकों को प्राथमिकता दें। बैक्टीरिया आधारित जैविक कीटनाशकए जैसे बेसिलस थुरिन्जिएन्सिस आधारित उत्पाद तथा फफूंद आधारित जैविक कीटनाशकए जैसे ब्यूवेरिया बेसियाना एवं मेटाराइजियम एनीसोप्लिएए का उपयोग लेबल पर दी गई अनुशंसित मात्रा के अनुसार करें।
- **जैविक नियंत्रण:** चने की इल्ली एवं तंबाकू की इल्ली जैसे पत्तीभक्षी कीटों के प्रभावी नियंत्रण के लिए उनकी प्रारंभिक लार्वा अवस्था में न्यूक्लियर पॉलीहाइड्रोसिस वायरस आधारित जैव-कीटनाशकों का प्रयोग किया जा सकता है। इनके प्रयोग से पहले फसल एवं कीट की अवस्था की पहचान तथा उत्पाद के लेबल पर दी गई मात्रा का पालन करना आवश्यक है।

समन्वित कीट प्रबंधन में रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग केवल आर्थिक क्षति स्तर के आधार पर आवश्यकतानुसार करें। इससे कीटों में कीटनाशक प्रतिरोध की समस्या को कम करनेए मित्र कीटों के संरक्षण तथा पर्यावरण सुरक्षा के साथसाथ दीर्घकालीन रूप से टिकाऊ कीट प्रबंधन में सहायता मिलती है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

बेहतर फसल-अधिक उपज गुणवत्तापूर्ण बीज का चयन

- **डॉ. विशाल मेश्राम,** वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक
- **डॉ. निधि प्रजापति,** वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)
- **डॉ. एस.आर. शर्मा,** वैज्ञानिक (पौध सरंक्षण)
- **डॉ. आशुतोष शर्मा,** वैज्ञानिक (कृषि वानिकी)
- **डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव,** वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी)
- **डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी,**

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर (म.प्र.)

भरपूर उत्पादन प्राप्त करने के लिये खेती के समस्त पहलुओं के साथ-साथ बीज एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसका उत्पादन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। बीज से तात्पर्य उन समस्त सामग्रियों से है, जो उसी प्रजाति के प्रसारण के लिये प्रयुक्त किया जाता है। इसीलिये सत्य बीज के अलावा कन्द एवं पौधों के कटे भागों को भी बीज के अन्तर्गत समहित किया गया है।

जो अपनी जाति के संवर्धन एवं विकास के लिये प्रयोग किया जाता है। और ऐसा गुण लगभग सभी अनाज के दानों में होता है। लेकिन अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये अनाज के दानों की आवश्यकता नहीं बल्कि अच्छे बीज की आवश्यकता होती है। अच्छा बीज एवं अनाज में काफी फर्क होता है। परन्तु किसान भाइयों की दृष्टि से दानों में कोई फर्क नहीं नजर जाता है। जिसके कारण उत्पादन पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। बीज वे होते हैं, जो सामान्य से हृष्ट-पुष्ट एवं स्वस्थ होते हैं, कम लागत में अधिक उत्पादन देने की छमता रखते हैं। प्रतिस्पर्धा करने, कीट व्याधियों से स्वयं की रक्षा करने तथा प्रतिकूल परिस्थितियों को भी सहने की क्षमता रखते हैं। जबकि ये सारी बातें घरेलू उपयोग वाले अनाजों में नही होती है। घरेलू उपयोग वाले अनाज पतले, हल्के, असमान आकार के, कीट व्याधियों से ग्रसित कटे-फटे दाने हो सकते हैं। इनकी बोनी करने से पौध संख्या कम मात्रा में प्राप्त होते हैं, पौधे पतले तथा कमजोर होते हैं। जिसके कारण उनमें न तो स्वयं में प्रतिस्पर्धा कर पाते हैं। परिणामस्वरूप अनेकों कीट एवं बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। उनको बढ़ने, फैलने फूलने एवं फलने के लिये पर्याप्त जगह नहीं मिल पाती है एवं उनका खाद्य पदार्थ खरपतवार उपयोग कर लेती है।

कई बार ऐसा भी देखने को मिलता है, कि बोनी के कुछ ही समय पूर्व किसान मंडी से अनाज खरीद कर लाता है और बिना उसका अंकुरण परीक्षण किये बोनी कर देता है। जिसका परिणाम यह देखने को मिलता है, कि पूरा का पूरा खेत खाली रह जाता है, अथवा अंकुरण इतना कम होता है, कि खेती की लागत निकलना भी मुश्किल हो जाता है। किसान इसको अपनी करनी का फल न मानकर भगवान की मर्जी मानकर उसको स्वीकार कर लेता है। लेकिन ऐसा क्यों होता है। इसका कारण क्या है, तो एक शब्द में इसका उत्तर होगा कि 'देश के अधिकांश किसानों का अशिक्षित होना' जिनको अनाज और बीज के बारे में ज्ञान में नही हैं। साथ ही ये भी ज्ञात नही हैं, कि उत्तम बीज कहां से प्राप्त हो सकता है, और यदि स्थान मालूम भी हो तो महंगा होने के कारण अच्छे गुणों वाला बीज नहीं खरीदते घर का या बाजार का अनाज खरीद कर बिना अंकुरण परीक्षण किये ही बोनी कर देते हैं। और यदि कुछ किसान अच्छे मानकों का बीज कमी खरीदते भी हैं, तो उसका प्रयोग इतने लम्बे समय तक करते हैं, कि उसकी गुणवत्ता पूरी तरह समाप्त हो जाने के बाद भी नही बलदलते है। बीज के बारे में कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में विस्तृत जानकारी इस प्रकार है।

बीज के अंकुरण क्षमता का परीक्षण

किसान भाइयों को चाहिये कि बोनी करने के लिये जो बीज या बीज के रूप में अनाज रखा गया हो उसकी अंकुरण क्षमता का परीक्षण अवश्य कर लें। हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। इस कारण यहाँ के तीज-त्योहार भी खेती से सीधा सम्बन्ध रखते हैं। जैसे हमारे यहाँ वर्ष में दो बार चैत्र एवं कार्तिक माह में नवरात्रि मनायी जाती है। घरों में जवारा बोया जाता है। लेकिन वर्तमान पीढ़ी के लोगों को शायद इस बात का ज्ञान नही है, कि ऐसा क्यों किया जाता है, वास्तव में यही शुभ मुहूर्त बीज परीक्षण का होता है। चैत्र माह की नवरात्रि में खरीफ मौसम अर्थात् वर्षात में बोयी जाने वाली फसलों के बीजों का अंकुरण परीक्षण करते हैं और क्वार माह की नवरात्रि में रबी मौसम या सर्दियों में बोयी जाने वाली फसलों के बीजों का अंकुरण परीक्षण करते हैं। कुछ लोगों को अभी भी लग रहा होगा कि वर्षात में बोये जाने वाले बीज का अंकुरण परीक्षण चैत्र में इतना पहले क्यों ? लेकिन इसका कारण इस कहावत से स्पष्ट हो जाता है, कि 'तेरह कार्तिक तीन असाढ़' अर्थात् असाढ़ की खेती केवल तीन दिनों की हो होती है। इस कारण इसके बीज का इतना पहले परीक्षण करते हैं, कि समय रहते बीज की व्यवस्था कर लें। यदि किसान किसी प्रमाणित या विश्वसनीय संस्था से बीज खरीदता है, तो थैले के मुँह पर लगे पर्चे पर उसका अंकुरण प्रतिशत दिया रहता है, और यदि प्रमाणित संस्था से बीज नही खरीदते हैं, तो अंकुरण का प्रशिक्षण स्वयं करें। इसके लिये बीज के ढेर में से थोड़ा बीज निकालकर 100 दाने गिन लेते हैं। और उसको किसी बर्तन में थोड़ा मिट्टी, रेत या राख डालकर उसमें बोनी कर देते हैं। 8-9 दिन बाद जमें हुए पौधों की गिनती कर लेते हैं। और फिर नीचे बताये गये सूत्र की सहायता से बीज का अंकुरण प्रतिशत निकालते हैं।

बीज का अंकुरण प्रतिशत =अंकुरित पौधों की संख्या/100

बोये गये बीज की संख्याः फिर पौधों को जड़ सहित उखाड़ कर उनकी जड़ों को पानी में धोकर देखते हैं। कि जड़ों में किसी प्रकार की कोई असामान्य सी बात तो नही है। फिर और तने को नापकर तुलना करते हैं। यदि धान्य फसलों में जड़ें लम्बी निकलती हैं और तना छोटा रहता है, तो इसका मतलब यह हुआ कि फसल में प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता नहीं है। उस बीज की फसल खेत से खाद्य पदार्थों का दोहन तो भरपूर मात्रा में नहीं प्राप्त होगा। इसके लिये बीज हो तो उसको छनने से छानकर केवल अच्छे मोटे एवं एक समान दानों का ही बोने में उपयोग करना चाहिये जबकि दलहनी एवं तिलहनी फसलों में इसके विपरीत जड़ तने से सदैव बड़ी होनी चाहिये तथा मोटी होनी चाहिये। बीज हमेशा 80-90 प्रतिशत से अधिक अंकुरण क्षमता वाले ही प्रयोग करना चााहिये, तथा समुचित मात्रा में पौध संख्या प्राप्त करने के लिये बीज की मात्रा उसी अनुपात में बढ़ा देना चाहिये। अंकुरण जाँच का दूसरा तरीका यह है, कि एक फटे-पुराने तौलिया को पानी से गिला करके फेला लेते हैं, और उसमें बराबर दूरी पर 100 दाने लगभग रखकर तौलिया को लपेट कर एक प्लास्टिक की थैली में रख देते हैं। 8-10 दिन बाद उसको थैली से निकालकर फेलाते हैं। एवं अंकुरित दानों की संख्या गिनकर ऊपर बताये गये तरीके से अंकुरण प्रतिशत एवं उनके जड़ एवं तने की जाँच करें।

बीज की भौतिक शुद्धता

बीज की भौतिक शुद्धता का तात्पर्य बीज का आकार, चमक, सुडौलपन एवं परिपक्वता से होता है। बीज की जाँच में ये लक्षण किसान भाइयों की काफी होना चाहिये। सभी बीज समान रूप से चमकदार होना चाहिये। यदि कुछ दाने किन्ही कारणों से कटे-फटे, सड़े-गले या खलिहान में भी गने से फफूंदयुक्त हो गये हो तो ऐसे बीज का भी प्रयोग नही करना चाहिये। कई बार फसल को कुछ कच्ची अवस्था में ही काटना पड़ जाता है, जिसके कारण दानों का आकार बेडौल हो जाता है, ऐसे बीज के दाने लगभग समान दिखते हैं, लेकिन बोनी के लिये ये बीज उपयुक्त नही है। बीज हमेशा पूरी तरह से पकी फसल का ही होना चाहिये। बीज में खरपतवार के बीज खेत में जाकर फसलों का भोजन ले लेते हैं, तथा फसलों से प्रतिस्पर्धा करते है। धूल-मिट्टी, कंकड़-पत्थर, भूसा एवं डण्ठल बोनी के समय समस्या उत्न्न करते हैं, तथा भूसा एवं डण्ठल से खेत में रोगों के कीटाणु, दीमक एवं अन्य समस्याओं की शिकायत हो सकती है।

बीज का आनुवांशिक तथा प्रजातीय शुद्धता

एक ही फसल किस्में विकसित हो जाने से यह समस्या अक्सर सामने आती है कि बीज तो एक ही फसल का है, लेकिन उसमें अनेक किस्मों की मिलावट है, जिसे पहचान पाना एवं अलग करना व्यवहारिक रूप में असम्भव है। ऐसे बीज की बोनी करने से उत्पादन में भारी कमी आती है। क्योकि हर किस्म का बढ़ने, फैलने, फूलने, फलने, खाद-पानी अवशोषित करने एवं पकने के समय में काफी अंतर होता है। इसलिये बीज हमेशा एक ही किस्म का बोने में प्रयोग करना चाहिये।

शंकर किस्मों का चलन व्यवहार में आने के बाद से तो किसान भाइयों के लिये समस्या और भी गम्भीर हो गयी है। बीज खरीदते समय किसानों को चाहिये, कि सर्वप्रथम इस बात का निर्णय कर लें कि उन्हें शंकर जाति की बोनी करनी है या कम्पोस्ट किस्म की। यदि शंकर जाति की बोनी करनी है, तो उसके लिये अधिक मात्रा में खाद पानी एवं पौध सुरक्षा की आवश्यकता होती है तथा बीज प्रत्येक वर्ष बदलना अनिवार्य है। जबकि कम्पोस्ट किस्मों में अतिरिक्त खाद पानी एवं पौध सुरक्षा का प्रबंध नही करना पड़ता है, न ही हर वर्ष बदलने की समस्या बदला गया तो उत्पादन में बहुत अधिक कमी आ जाती है। जिससे गया तो उत्पादन में बहुत अधिक कमी आ जाती है। जिससे किसानों को आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ता है। लेकिन सत्य बात तो ये है, कि शंकर जातियों की उत्पादन क्षमता कम्पोजिट जातियों से बहुत अधिक होता है।

बीज का आकार रंग तथा आकृति में समानता

बीज का रंग आकृति तथा सभी बीजों का आकर लगभग एक समान होना चाहिये। छोटे-बड़े आकार के असमान बीज नहीं होना चाहिये, यदि ऐसा है, तो बोनी के पूर्व बीज को छन्ने ये छानकर एक समान आकर के बीज ही बोने में प्रयोग करें। छोटे आकार का बीज वास्तव में अपरिपक्व रोग ग्रसित तथा कमजोर दाने होते हैं। इनमें संचित खाद्य पदार्थ की माात्रा भी कम होता है। बीज का रंग भी लगभग एक समान ही चमकदार तथा एक रंग का होना चाहिये। प्रत्येक बीज की आकृति में भी समानता होनी चाहिये। ऐसा न हो कि कुछ बीज सिकुड़ एवं कुद सुडौल आकृति के हो, ऐसे बीजों से उगने वाले पौधे भी कमजोर होते है, उनसे उपज कम प्राप्त होती है तथा किसानों को आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ता है।

बीज की परिपक्वता

बीज खरीदते समय यह बात विशेष तौर पर ध्यान देने की है, कि पूरी तरह से पके हुए (परिपक्व) बीज ही खरीदें। क्योंकि परिपक्व बीज का जमाव अच्छा तथा शत-प्रतिशत होता है। बीज यदि यदि अपरिपक्व अवस्था का है, तो उसका जमाव कम प्रतिशत में होता है। ऐसे बीजों से उगने वाले पौधे कमजोर होते हैं, उनमें खरपतवार, जलवायु की प्रतिकूल दशाओं, कीड़ों तथा रोगों से संघर्ष करने की शक्ति कम होती है। पका हुआ (परिपक्व) बीज चमकीला साफ, गूदेदार, भरा हुआ, एक समान आकार का तथा देखने में स्वस्थ्य व मनमोहक होता है। इसके विपरीत अपरिपक्व बीज हमेशा आकार में असमानता लिये हुए सिकुड़े, छोटे विभिन्न रंगों वाले देखने में अनाकर्षक होते हैं।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

कैसे लें टमाटर की भरपूर फसल

- डॉ. विशाल मेश्राम, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक
- डॉ. निधि प्रजापति, वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)
- डॉ. एस.आर. शर्मा, वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- डॉ. आशुतोष शर्मा, वैज्ञानिक (कृषि वानिकी)
- डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी)
- डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी, कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर (म.प्र.)

टमाटर एक ऐसी सब्जी फसल है, जिसे वर्षभर उगाया जा सकता है। इसकी खेती एवं उत्पादन करना अपेक्षाकृत सरल है। टमाटर का उपयोग सब्जी, सूप, सलाद, अचार, केचप, प्यूरी एवं सॉस बनाने में किया जाता है। टमाटर विटामिन ए, बी एवं सी का अच्छा स्रोत है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं। टमाटर का नियमित सेवन कब्ज को दूर करने में सहायक माना जाता है।

भूमि का चुनाव

बलुई-दुमट मिटटी जिसमें जल निकास अच्छा हो टमाटर की खेती के लिये उपयुक्त होती हैं। भूमि का पी.एच.मान 6 से 7 तक होना चाहिये।

भूमि की तैयारी

दो या तीन बार जुताई करने के बाद बखर चलाकर मिटटी को अच्छी तरह से भुरभुरी बना लेना चाहिये।तथा पाटा लगाकर खेत को सममतल बना लेना चाहिये।

जातियां

अर्का रक्षक, अर्का सम्राट,अर्का अभेद,अर्का अनन्या,अर्का विकास,अर्का आभा,अर्का सौरभ,काशी ,अमन,काशी तपस,काशी अद्भुत,काशी अनुपम,पूसा हाइब्रिड-4,पूसा हाइब्रिड-8,पूसा रूबी, जवाहर टमाटर-99, लक्ष्मी 5005, सुपर लक्ष्मी, काशी अमृत, काशी अनुपन, काशी विशेष, पुसा सदाबहार, अर्का सौरभ, अर्का विकास, अर्का आभा, अर्का विशाल।

फसल चक्र

भिण्डी-टमाटर- खीरा,
बरबटी-टमाटर -करेला
खीरा -टमाटर -लौकी

बीज एवं बीजोपचार

टमाटर का बीज 500 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से लगता है। नर्सरी में बीज बोने के पूर्व थायरम या डायथेन एम-45 नामक 3 ग्राम दवा की प्रति किलो ग्राम के बीज की दर से उपचारित करें।

रोपणी तैयार करना

पौधशाला की मिट्टी को कीटाणु एवं रोगाणु रहित करना अति आवश्यक है। इसके लिये क्यारियों को सौर ऊर्जा से उपचारित करें। इसमें तैयार क्यारियो (3.5 मी. गुणा 1.0 मी.) को पोलीथिन शीट से ढंककर करीब 20 से 25 दिन तक रखें। बोवाई के 10 दिन पहले प्रत्येक क्यारियों में 10-20 किलो ग्राम अच्छी सड़ी गोबर की खाद तथा 500 ग्राम 15:15:15 सकुल उर्वरक डालिये। नर्सरी क्यारियों में कतार से कतार 10 से.मी. और बीज की दूरी 5 से.मी. (कतार में) रखते हुये एक इंच की गहराई पर बीज को बोयें। बोवाई के बाद क्यारियों को कांस अथवा सूखे पुआल से ढंक दे। इसके तुरंत बाद सिंचाई करना चाहिये। आवश्यतानुसार सिंचाई और पौध संरक्षण करते रहना चाहिये।

पौध रोपाई

अच्छी तरह तैयार खेत में सांयकालीन समय में कतार से कतार 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे 30-45 से.मी. दूरी रखते हुये रोपाई करें तथा सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक

200-250 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर खाद 50 किलो स्फुर तथा 50 किलो पोटाश प्रति हेक्टर की दर से खेत की तैयारी करते समय डाल देना चाहिये। नत्रजन 100 किलो जिसकी एक तिहाई मात्रा पौधा लगाने के पूर्व तथा बाकी दो तिहाई पौधा लगाने के बाद दो बार में 20 दिन तथा 40 दिन बाद डालना चाहिये। वर्षा ऋतु में नत्रजन की पूरी मात्रा पौधे लगाने के बाद दो बार में 15 दिन तथा 45 दिन बाद डाल देना चाहिये।

सिंचाई

टमाटर की फसल में आवश्यकता होने पर हल्की सिंचाई करें, आवश्यकता से अधिक सिंचाई करने पर फसल पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। वर्षा ऋतु में सामान्य वर्षा होने पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ठण्ड के दिनों 10-12 दिनों के अंतर से तथा गर्मी में 5-6 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करना चाहिये। यदि पाला पड़ने की सम्भावना हो तो खेत की आवश्यक रूप से सिंचाई करें।

निंदाई गुड़ाई

खेत को खरपतवारों से साफ रखने तथा फसल वृद्धि के लिये निंदाई गुड़ाई आवश्यक है। परन्तु यह गुड़ाई करते समय ध्यान रखे कि गुड़ाई उथली हो जिससे पौधे की जड़ों को नुकसान न हो। रासायनिक नीदा नियंत्रण हेतु लासों ई.सी. 50 का 4 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी मिलाकर रोपाई के दो दिन पूर्व छिड़काव करें। इस रसायन का प्रभाव केवल 45 दिन तक ही रहता है।

अन्य कार्य

बरसात में फलों को सड़ने से बचाने के लिये पौधों को बांस या लकड़ी के सहारे जमीन से ऊपर रखते हैं। पत्तियों पर कैल्शियम अथवा मैग्नीशियम सल्फेट के 0.3 प्रतिशत छिड़काव करने से फल कम फटते हैं। छिड़काव पौधे लगाने के एक महीने बाद दो बार 15 दिन के अंतर से करना चाहिये।

प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

फल छेदक: इल्ली कच्चे एवं पके फलों में छेद कर अंदर प्रवेश करती है तथा फल को खराब कर देती है।

प्रबंधन

- क्षतिग्रस्त फलों एवं इल्लियों को तोड़कर नष्ट करें।
- फेरोमोन ट्रैप लगभग 10-12/हेक्टेयर लगाएँ।
- खेत में गेंदा की सहफसल का प्रयोग किया जा सकता है।
- जैविक नियंत्रण के लिए हेलिकोवरपा आर्मिगेरा न्यूक्लियर पॉलीहेड्रोसिस वायरस अथवा ट्राईकोग्रामा का प्रयोग किया जा सकता है।
- अधिक प्रकोप होने पर इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी/ 150-200 ग्राम/हेक्टेयर या अन्य टमाटर में पंजीकृत कीटनाशक का प्रयोग लेबल के अनुसार करें।
- **सफेद मक्खी:** पत्तियों से रस चूसने के कारण पौधे कमजोर होते हैं तथा यह पर्ण कुंचन जैसे विषाणु रोगों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रबंधन

- पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएँ।
- खेत को खरपतवार मुक्त रखें।
- नीम तेल 5 मिली/लीटर पानी का छिड़काव किया जा सकता है।
- अधिक प्रकोप होने पर टमाटर में पंजीकृत कीटनाशक का प्रयोग करें।
- **थ्रिप्स एवं जैसिड:** ये पत्तियों एवं कोमल भागों से रस चूसकर पौधे की वृद्धि को प्रभावित करते हैं।

प्रबंधन

- नीले/पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएँ।
- खरपतवार नियंत्रण रखें।
- प्रारंभिक प्रकोप में नीम आधारित उत्पाद का प्रयोग करें।
- अधिक प्रकोप पर फसल में पंजीकृत कीटनाशक का लेबल अनुसार प्रयोग करें।
- **एपीलैकना बीटल:** शिशु एवं वयस्क दोनों पत्तियों को खाकर नुकसान पहुँचाते हैं। अधिक प्रकोप में पत्तियाँ जालीदार दिखाई देती हैं।

प्रबंधन

- कीट प्रभावित पत्तियों को एकत्र कर नष्ट करें।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

स्मार्ट किसान की स्मार्ट खेती

जलवायु परिवर्तन के दौर में एआई और मोबाइल ऐप्स का उपयोग

- **शिवानी शर्मा**
  पीएच.डी. शोधार्थी, सस्य विज्ञान विभाग
  भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान,
  भोपाल (म.प्र.)
- **डॉ. निलेश निनामा**
  पीएच.डी. उद्यानिकी (सब्जी विज्ञान)
  कृषि प्रशिक्षक, एग्रीएक्सप्लोर अकादमी,
  रतलाम (म.प्र.)

खेती प्रकृति पर निर्भर व्यवसाय है। तापमान, वर्षा, मिट्टी, पानी, कीट-रोग और बाजार में होने वाले बदलाव सीधे आपकी लागत और आमदनी को प्रभावित करते हैं। बदलती जलवायु में कभी बारिश देर से आती है, कभी कम समय में बहुत अधिक वर्षा हो जाती है और कभी लंबे समय तक बारिश नहीं होती।

ऐसे समय में खेती की सही योजना बनाना पहले से अधिक जरूरी हो गया है। जलवायु-अनुकूल कृषि का अर्थ है- मौसम और स्थानीय परिस्थितियों को समझकर पानी, मिट्टी, खाद, श्रम और अन्य संसाधनों का सही उपयोग करना तथा मौसम से होने वाले जोखिम को कम करना।आज आपके हाथ में मौजूद स्मार्टफोन इस काम में महत्वपूर्ण मदद कर सकता है। एआई तकनीक, आईओटी तकनीक, सैटेलाइट तकनीक, ड्रोन तकनीकए मौसम सेवाएं, मृदा परीक्षण, फसल निगरानी, डिजिटल बाजार और फसल बीमा- इनका उपयोग फसल के अलग-अलग चरणों में किया जा सकता है। स्मार्ट खेती का मतलब यह नहीं है कि आपको महंगे उपकरण खरीदने ही पड़ेंगे। शुरुआत मोबाइल में उपलब्ध विश्वसनीय एप और पोर्टल से करें और खेत की आवश्यकता के अनुसार आगे सेंसर, स्वचालन और ड्रोन जैसी तकनीक जोड़ें।

फसल बोने से पहले देखें

फसल की स्मार्ट योजना बुवाई से पहले शुरू होती है। कोई फसल चुनने से पहले चार बातें जरूर देखें-

- आगामी मौसम की सामान्य स्थिति कैसी रहने की संभावना है।
- मेरे क्षेत्र में पानी की उपलब्धता कितनी होगी।
- मेरी मिट्टी किस फसल के लिए उपयुक्त है।
- जिस फसल को मैं उगाने वाला हूं, उसके बाजार में मांग और भाव की स्थिति कैसी है।
- इन चारों सवालों के उत्तर को एक साथ देखकर फसल योजना बनाना स्मार्ट कृषि की शुरुआत है। यदि आपको पता है कि मौसम कैसा रहने की संभावना है, खेत की मिट्टी में पोषक तत्वों की स्थिति क्या है, सिंचाई कितनी उपलब्ध है और फसल बेचने का बाजार कैसा है, तो फसल चयन और खेती की योजना बेहतर बनाई जा सकती है।

मौसम की जानकारी के लिए

- MAUSAM App: मौसम एप के माध्यम से मौसम पूर्वानुमान और मौसम संबंधी चेतावनियों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसका उपयोग केवल यह जानने के लिए न करें कि आज बारिश होगी या नहीं। इसे खेती के निर्णयों से जोड़ें। जैसे बुवाई से पहले मौसम की स्थिति देखें। सिंचाई से पहले बारिश की संभावना देखें। तेज हवा या भारी बारिश की चेतावनी होने पर आवश्यक कृषि कार्य की योजना बदलें। कटाई से पहले आगामी मौसम देखकर तैयारी करें। लंबी अवधि का मौसम पूर्वानुमान केवल योजना बनाने का संकेत देता है। तत्काल कृषि निर्णय के लिए निकट अवधि का पूर्वानुमान अधिक उपयोगी होता है।
- **Meghdoot App:** मेघदूत एप मौसम की जानकारी को कृषि कार्यों से जोड़कर मौसम आधारित कृषि सलाह प्राप्त करने में सहायता करता है। याद रखें। मौसम एप से मौसम समझें और मेघदूत एप से मौसम के अनुसार कृषि सलाह लें।

आकाशीय बिजली से सुरक्षा के लिए

- Damini App : खुले खेत में काम करने वाले किसान के लिए आकाशीय बिजली गंभीर जोखिम है। दामिनी एप आकाशीय बिजली से संबंधित चेतावनी और जानकारी प्राप्त करने में सहायता करता है। यदि बिजली की चेतावनी मिले तो खेत में काम जारी रखने के बजाय सुरक्षित स्थान पर जाना चाहिए।

मिट्टी की जांच

- Soil Health Card Portal: मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड पोर्टल मृदा परीक्षण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड से जुड़ी सेवाओं के लिए उपयोगी है। किसान मिट्टी का नमूना अधिकृत प्रयोगशाला में जांच के लिए दें और प्राप्त रिपोर्ट को सुरक्षित रखें। रिपोर्ट के आधार पर फसल के पोषक तत्व प्रबंधन की योजना बनाई जा सकती है।
- e-Farms Soil Mobile App: ई-फार्म्स एप एक बहुत ही स्मार्ट स्मार्टफोन ऐप है। इसे भोपाल के भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान ने बनाया है। यह ऐप पूरी तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित है। इसमें मध्य प्रदेश की मिट्टी का सारा डेटा मौजूद है। किसान अब खेत में खड़े होकर मिट्टी की जांच करेंगे। मिट्टी के पोषक तत्वों की जानकारी तुरंत मिल जाएगी। किसानों की सुरक्षा के लिए एक खास छड़ी भी है। इस छड़ी का नाम किसान मित्र छड़ी रखा गया है। यह तकनीक खेती को आसान और सुरक्षित बनाएगी।

उन्नत सिंचाई के लिए

- Net Beat: टपक सिंचाई, बागवानी या उच्च मूल्य वाली फसलों में हृद्गह्ल ङ्क्ष्ड्डह्ल सॉफ्टवेयर जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म सेंसर, मौसम, मिट्टी की नमी और सिंचाई व्यवस्था से प्राप्त जानकारी को जोड़कर सिंचाई एवं उर्वरक प्रबंधन में सहायता करता हैं। हर किसान को ऐसी उन्नत व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है। जहां सिंचाई व्यवस्था और फसल का मूल्य इसे उचित बनाता होए वहीं इसका उपयोग अधिक उपयोगी हो सकता है।
- आईओटी तकनीक और फसल एप से सिंचाई का बेहतर प्रबंधन
- पानी की बचत और सही समय पर सिंचाई जलवायु-अनुकूल खेती का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

आईओटी तकनीक

आईओटी तकनीक आधारित मृदा नमी सेंसर उपकरण खेत की मिट्टी में नमी की स्थिति की निगरानी करने में सहायता करते हैं। इससे किसान को यह समझने में मदद मिलती है कि सिंचाई की आवश्यकता है या नहीं।

- Fasal App: फसल एप के कृषि समाधानों में मृदा नमी की निगरानी, सिंचाई संबंधी सलाह और सिंचाई स्वचालन जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसके साथ फसल क्रांति उपकरण जैसे सेंसर आधारित उपकरणों का उपयोग करके खेत की नमी और अन्य परिस्थितियों की जानकारी ली जा सकती है। इसका मुख्य उद्देश्य है- जरूरत के अनुसार सिंचाई करें, केवल आदत के अनुसार नहीं।

खेत गए बिना मोटर नियंत्रण

- KisanRaja App : यदि आपका खेत घर से दूर है तो बार-बार मोटर चालू या बंद करने के लिए खेत तक जाना समय और श्रम दोनों ले सकता है। चद्बह्यड्डठ्ठक्रड्डद्भड्ड-श्च्श्च के साथ उपलब्ध मोटर नियंत्रण प्रणाली के माध्यम से मोबाइल आधारित तरीके से मोटर को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए खेत में उपयुक्त मोटर नियंत्रक उपकरण लगाया जाता है। इससे मोटर संचालन को व्यवस्थित करने और अनावश्यक चक्कर कम करने में सहायता मिल सकती है। उपकरण खरीदते समय उसके मॉडल और उपलब्ध सुरक्षा सुविधाओं की जानकारी जरूर लें।

फसल में रोग और कीट की प्रारंभिक पहचान

फसल में पत्तियों का रंग बदलना, धब्बे आना, मुरझाना या वृद्धि रुकना कई कारणों से हो सकता है। ऐसी स्थिति में शुरुआती पहचान महत्वपूर्ण है।

- Plantix App : पौधे की तस्वीर के आधार पर संभावित रोग या अन्य फसल समस्या की प्रारंभिक पहचान में सहायता कर सकता है। किसान साफ तस्वीर लेकर एप में जांच कर सकता है। परिणाम को प्रारंभिक जानकारी मानें और खेत की वास्तविक स्थिति तथा कृषि विशेषज्ञ की सलाह से पुष्टि करें।
- Agrio App : फोटो आधारित रोग एवं कीट पहचान तथा खेत की डिजिटल निगरानी में सहायता करता है। इन दोनों तकनीकों का सबसे अच्छा उपयोग है- समस्या जल्दी पहचानें, लेकिन उपचार का निर्णय पुष्टि के बाद लें।

सैटेलाइट तकनीक से खेत की निगरानी

किसान हर दिन खेत के प्रत्येक हिस्से को बारीकी से नहीं देख सकता। यहां सैटेलाइट तकनीक उपयोगी है। उपग्रह आधारित जानकारी से खेत के अलग-अलग हिस्सों में फसल की स्थिति में अंतर का संकेत मिलता है।

- Farmonaut : सॉफ्टवेयर उपग्रह आधारित फसल निगरानी और खेत से संबंधित डिजिटल जानकारी उपलब्ध कराने में सहायता करता है। यदि खेत के किसी हिस्से की स्थिति बाकी खेत से अलग दिखाई दे तो किसान उस स्थान पर जाकर वास्तविक निरीक्षण कर सकता है।उपग्रह से संकेत लें, लेकिन अंतिम निर्णय खेत में जाकर करें।

खरपतवार और सटीक कृषि कार्य

खरपतवार फसल के पानी, पोषक तत्व, प्रकाश और स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। आधुनिक कृषि में एआई तकनीक और कैमरा आधारित प्रणालियों की मदद से फसल और खरपतवार की पहचान तथा खेत के जरूरत वाले हिस्सों पर ध्यान केंद्रित करने की दिशा में तकनीक विकसित हो रही है।

ड्रोन तकनीक

कृषि ड्रोन का उपयोग खेत का हवाई निरीक्षण और कुछ कृषि-इनपुट के छिड़काव जैसे कार्यों के लिए किया जाता है। छोटे किसान के लिए ड्रोन खरीदना जरूरी नहीं है। आवश्यकता होने पर उपलब्ध कृषि ड्रोन सेवा किराये या सेवा के आधार पर ली जा सकती है।

- **IoTech World कंपनी:** कृषि ड्रोन से संबंधित समाधान उपलब्ध कराती है।
- **Garuda Aerospace कंपनी:** कृषि ड्रोन और कृषि छिड़काव से संबंधित समाधान उपलब्ध कराती है।
- ड्रोन से किसी भी कृषि-रसायन का उपयोग करते समय संबंधित उत्पाद के कानूनी निर्देशए सुरक्षा नियम और प्रशिक्षित/अधिकृत सेवा प्रदाता की सलाह का पालन करना जरूरी है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

सरदार शहर में ACE ट्रैक्टर्स की नई डीलरशिप का शुभारंभ

500 से अधिक किसानों की मौजूदगी में ग्राहक मिलन समारोह

ट्रैक्टर डिलीवरी और बुकिंग से बढ़ा उत्साह

सरदारशहर (राजस्थान)। एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) ने राजस्थान के सरदारशहर में अपनी नई डीलरशिप एम/एस खुशबू एग्री मशीनरी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डीलरशिप उद्घाटन एवं भव्य ग्राहक मिलन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र के 500 से अधिक प्रगतिशील किसानों एवं ग्राहकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समारोह में ACEके बिजनेस हेड श्री रविंद्र खनेजा, स्टेट हेड श्री मनोज दीक्षित, सेल्स मैनेजर श्री नंदकिशोर चरण तथा ACE चैंपियन श्री राजेश व्यास की उपस्थिति रही। नई डीलरशिप के प्रतिनिधियों एवं टीम ने किसानों और ग्राहकों का स्वागत किया।

ग्राहक मिलन समारोह के दौरान किसानों को ACE ट्रैक्टर्स की तकनीकी खूबियों, दमदार प्रदर्शन, आधुनिक कृषि कार्यों में उपयोगिता और विभिन्न कृषि जरूरतों के अनुरूप उनकी क्षमता के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। ACE टीम ने किसानों से सीधे संवाद कर उनकी जरूरतों, अनुभवों और अपेक्षाओं को भी समझा। किसानों ने क्षेत्र में ACE ट्रैक्टर्स के प्रति बढ़ते भरोसे और रुचि को प्रदर्शित किया।

समारोह के दौरान ACE DI 550 ट्रैक्टर की एक सफल डिलीवरी की गई। वहीं ACE DI Chetak 4WD की एक बुकिंग भी प्राप्त हुई। इसके अलावा पांच नए संभावित ग्राहकों ने ACE ट्रैक्टर्स के संबंध में पूछताछ दर्ज कराई। इन परिणामों से स्पष्ट हुआ कि सरदारशहर एवं आसपास के कृषि क्षेत्रों में किसानों के बीच ACE के आधुनिक और उपयोगी ट्रैक्टरों को लेकर अच्छी रुचि है। समारोह का विशेष आकर्षण ACE के पुराने एवं विश्वसनीय ग्राहकों का सम्मान रहा। लगभग 10 वर्षों से ACE DI 550 का उपयोग कर रहे किसानों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इन किसानों ने अपने लंबे अनुभव साझा करते हुए ACE ट्रैक्टरों के प्रदर्शन और विश्वसनीयता के प्रति भरोसा व्यक्त किया। पुराने ग्राहकों का सम्मान ACE और किसानों के बीच वर्षों से कायम मजबूत रिश्ते और विश्वास का प्रतीक बना।

ग्राहक मिलन समारोह के बाद क्षेत्र में ACE ट्रैक्टर्स का रोड शो आयोजित किया गया। रोड शो के माध्यम से आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों तक ACE ट्रैक्टर्स की जानकारी और नई डीलरशिप की उपलब्धता का संदेश पहुंचाया गया। नई डीलरशिप एम/एस खुशबू एग्री मशीनरी के ACE परिवार में शामिल होने से सरदारशहर और आसपास के किसानों को अब ट्रैक्टरों की बिक्री, सर्विस, स्पेयर पार्ट्स और ग्राहक सहायता की सुविधाएं स्थानीय स्तर पर मिल सकेंगी।

इस अवसर पर ACE के बिजनेस हेड श्री रविंद्र तनेजा, स्टेट हेड श्री मनोज दीक्षित, सेल्स मैनेजर श्री नंदकिशोर चरण एवं ACE चैंपियन श्री राजेश व्यास ने नई डीलरशिप टीम को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने क्षेत्र के किसानों को बेहतर उत्पाद, तकनीकी सहयोग और विश्वसनीय बिक्री-पश्चात सेवा उपलब्ध कराने पर जोर दिया।

इफको की किसान सभा में आधुनिक कृषि तकनीकों की दी जानकारी

बैतूल। जिले के ग्राम हिडली में सोसायटी की आम सभा के अवसर पर इफको ने किसान सभा का आयोजन किया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय किसानों को कृषि उत्पादन बढ़ाने, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन एवं आधुनिक कृषि तकनीकों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में इफको के क्षेत्रीय अधिकारी महेन्द्र कुमार पटेल ने किसानों को इफको के विभिन्न कृषि उत्पादों एवं उनके उचित उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने विशेष रूप से नैनो यूरिया, नैनो डीएपी एवं अन्य नैनो उर्वरकों के उपयोग, लाभ तथा फसलों में इनके सही प्रयोग की विधि के बारे में किसानों को जागरूक किया। इसके अलावा सागरिका के उपयोग एवं फसलों में इसके लाभ, कंसोर्टिया जैसे जैव उर्वरक उत्पादों तथा इफको के अन्य कृषि उत्पादों की उपयोगिता के बारे में भी विस्तार से बताया गया। किसानों को उर्वरकों का संतुलित एवं मृदा परीक्षण आधारित उपयोग करने तथा अनावश्यक एवं असंतुलित उर्वरक प्रयोग से बचने की सलाह दी गई। सभा के दौरान किसानों ने अपनी कृषि संबंधी समस्याएं एवं जिज्ञासाएं रखीं, जिन पर अधिकारियों ने चर्चा करते हुए आवश्यक समाधान एवं तकनीकी सुझाव दिए। किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर उत्पादन एवं आय बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया।

माइक्रो इरिगेशन के विस्तार पर 54 कंपनियां एकजुट

किसानों को बेहतर सुविधा, गुणवत्तापूर्ण सामग्री और अधिक अनुदान दिलाने पर जोर

इंदौर। मध्य प्रदेश के उद्यानिकी विभाग में पंजीकृत माइक्रो इरिगेशन क्षेत्र की 54 कंपनियों के प्रतिनिधियों की बैठक इरिगेशन एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएआई), मध्य प्रदेश चैप्टर द्वारा इंदौर में आयोजित की गई। अध्यक्षता आईएआई मध्य प्रदेश चैप्टर के चेयरमैन श्री ओमनाथ वर्मा ने की।

बैठक में प्रदेश में माइक्रो इरिगेशन योजनाओं के क्रियान्वयन, किसानों को मिलने वाले लाभ, विभागीय प्रक्रियाओं और व्यावहारिक समस्याओं पर चर्चा की गई। आईएआई के पूर्व अध्यक्ष श्री नरेंद्र धनधारे ने बताया कि प्रदेश में करीब 65 लाख हेक्टेयर सिंचित क्षेत्र है, जिसमें लगभग 30 लाख हेक्टेयर माइक्रो इरिगेशन की संभावनाओं वाला क्षेत्र है। उन्होंने विस्तार की गति बढ़ाने और ड्रिप, स्प्रिंकलर व मिनी स्प्रिंकलर को प्राथमिकता देने की आवश्यकता बताई। श्री ओमनाथ वर्मा ने माइक्रो इरिगेशन योजनाओं के लिए नोडल एजेंसी की एकीकृत व्यवस्था बनाने तथा वार्षिक लक्ष्य 2.5 से 3 लाख हेक्टेयर करने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य का 10 प्रतिशत टॉप-अप अनुदान पुनः शुरू कर इसे 25-30 प्रतिशत तक बढ़ाने की मांग की।

बैठक में सभी कंपनियों ने भारत सरकार की गाइडलाइन एवं बीओक्यू के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण और निर्धारित मात्रा में सामग्री उपलब्ध कराने पर सहमति जताई। किसानों को जल बचत, उत्पादकता और सरकारी योजनाओं की जानकारी देने के लिए सामूहिक जागरूकता अभियान चलाने पर भी जोर दिया गया।बैठक में आईएआई के सचिव अनमोल मांकड, संयुक्त सचिव प्रदीप पाध्ये सहित अन्य पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सुनील अवधवाल और अर्पित गुप्ता को नए कोर ग्रुप सदस्यों के रूप में शामिल किया गया। कंपनियों ने किसानों के हित में एकजुट होकर माइक्रो इरिगेशन के विस्तार को गति देने का संकल्प लिया।

बरसाती मौसम और अफ्लाटॉक्सिन
दुधारू पशुओं की खुराक में छिपा खतरा

● डॉ. महेन्द्र सिंह मील ● डॉ. एच.एम. आलम
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर (राजस्थान)

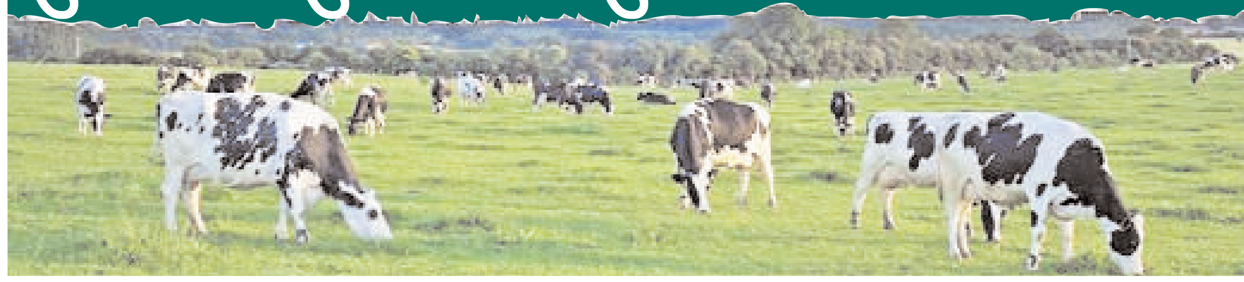

बरसात का मौसम जहाँ हरियाली और ताजगी लेकर आता है, वहीं यह पशुपालन के लिए कई चुनौतियाँ भी खड़ी करता है। इस मौसम में सबसे बड़ी समस्या है - पशु आहार और चारे का खराब होना। नमी और गीलेपन के कारण चारे व दानों पर फफूंद पनप जाती है, जो अफ्लाटॉक्सिन जैसे जहरीले पदार्थ का निर्माण करती है। यह जहर न केवल पशुओं की सेहत बिगाड़ता है बल्कि दूध की गुणवत्ता और उत्पादन पर भी गंभीर असर डालता है।

अफ्लाटॉक्सिन क्या है?

अफ्लाटॉक्सिन एक प्रकार का माइकोटॉक्सिन है, जो मुख्यत: Aspergillus flavus और Aspergillus parasiticus नामक फफूंद द्वारा उत्पन्न होता है। यह फफूंद अधिकतर गीले, गर्म और नमी वाले वातावरण में तेजी से पनपती है।

- यह मकई, मूंगफली, कपास बीज खली, सरसों खली, ज्वार, बाजरा और चारे में आसानी से फैल सकती है।
- जब पशु इस तरह का दूषित चारा खाते हैं तो अफ्लाटॉक्सिन उनके शरीर में प्रवेश कर जिगर (लिवर) को नुकसान पहुँचाता है।
- यह दूध के माध्यम से भी निकलता है और सीधे मनुष्यों तक पहुँच जाता है।

बरसात के मौसम में अफ्लाटॉक्सिन का खतरा क्यों बढ़ता है?

- **नमी की अधिकता:** लगातार बारिश और नमी के कारण दाने व चारा जल्दी खराब होते हैं।
- **भंडारण की समस्या:** किसान अक्सर चारे को खुले में या साधारण ढेर लगाकर रखते हैं। बरसात में यह गीला होकर फफूंदग्रस्त हो जाता है।
- **तापमान का प्रभाव:** इस मौसम में 25-35 डिग्री सेन्टीग्रेड तक का तापमान फफूंद के लिए अनुकूल होता है।
- **हरे चारे की अधिकता:** बरसात में हरा चारा तो पर्याप्त मिलता है लेकिन यदि उसे ठीक से संग्रहित नहीं किया जाए तो जल्दी सड़ जाता है।

पशुओं पर अफ्लाटॉक्सिन का प्रभाव

दूध उत्पादन घटता है: दूध की मात्रा कम हो जाती है।

दूध की गुणवत्ता बिगड़ती है: दूध में अफ्लाटॉक्सिन एम-1 पाया जाने लगता है।

- **भूख कम हो जाती है:** पशु चारे की ओर कम आकर्षित होते हैं।
- **जिगर पर असर:** यह जहर लिवर को धीरे-धीरे खराब करता है।
- **बीमारियों का खतरा:** प्रतिरोधक क्षमता घटती है और पशु जल्दी बीमार पड़ जाते हैं।
- **बच्चों और गर्भस्थ बछड़ों पर असर:** अफ्लाटॉक्सिन से नवजात या गर्भस्थ बछड़े कमजोर हो सकते हैं।
- **मनुष्यों पर असर :** अफ्लाटॉक्सिन युक्त दूध और दूध उत्पादों का सेवन मानव स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। ▸ यह कैंसर (विशेषकर लिवर कैंसर) का कारण बन सकता है। ▸ बच्चों में पोषण की कमी और रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी होती है। ▸ लंबे समय तक सेवन करने से जिगर की बीमारियाँ पनप सकती हैं।
- **रोकथाम के उपाय :** ▸ भंडारण पर ध्यान दें। ▸ अनाज और चारे को हमेशा सूखे और हवादार स्थान पर रखें। ▸ पुराने और नए दाने कभी भी साथ में न मिलाएँ। ▸ चारे को जमीन से ऊँचे प्लेटफॉर्म पर रखें।
- **साफ-सफाई :** ▸ गोदाम, बाड़ा और पशु आहार के बर्तनों को नियमित रूप से साफ और सूखा रखें। ▸ फफूंद लगे दाने या चारा तुरंत हटा दें।
- **फफूंदनाशक का प्रयोग :** ▸ भंडारित अनाज पर समय-समय पर सुरक्षित फफूंदनाशक (जैसे प्रोपियोनिक एसिड) का छिड़काव किया जा सकता है।
- **टॉक्सिन बाइंडर का उपयोग :** ▸ बाजार में उपलब्ध टॉक्सिन बाइंडर (जैसे बेंटोनाइट, जिओलाइट, एक्टिवेटेड चारकोल) को आहार में मिलाने से अफ्लाटॉक्सिन का असर कम किया जा सकता है।
- **साइलो और साइलेंज :** ▸ हरे चारे को बरसात में साइलो पिट बनाकर सुरक्षित किया जा सकता है। इससे न तो चारा सड़ेगा और न ही फफूंद लगेगी। ▸ दाने सुखाकर ही संग्रहित करें। ▸ अनाज और खलियों को अच्छी तरह धूप में सुखाकर ही स्टोर करें।

किसानों के लिए उपयोगी सुझाव

▸ पशुओं को कभी भी फफूंद लगा या सड़ा-गला चारा न खिलाएँ। ▸ बरसात में पशुओं को ताजा हरा चारा और संतुलित आहार दें। ▸ आहार में खनिज मिश्रण और विटामिन शामिल करें, ताकि उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़े। ▸ दूध को नियमित रूप से जांच के लिए भेजें, खासकर जब पशु का दूध पीला या बदबूदार लगे। बरसात का मौसम दुधारू पशुओं के लिए उतना ही चुनौतीपूर्ण है जितना कि लाभकारी। इस मौसम में जहाँ चारे की उपलब्धता बढ़ती है, वहीं अफ्लाटॉक्सिन का खतरा भी कई गुना बढ़ जाता है। यदि किसान थोड़ी सतर्कता बरतें और आहार के संग्रहण, स्वच्छता तथा टॉक्सिन बाइंडर के प्रयोग पर ध्यान दें तो इस समस्या से आसानी से बचा जा सकता है। साफ और सुरक्षित खुराक ही अच्छे दूध और स्वस्थ पशुओं की कुंजी है।

फसलों में एकीकृत कीट-व्याधि प्रबंधन की दी तकनीकी जानकारी

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 9 सितंबर 2026 को ग्राम सिलपरी एवं बरमानीया में कृषक प्रक्षेत्र भ्रमण आयोजित किया गया। इस दौरान किसानों को फसलों में एकीकृत कीट-व्याधि प्रबंधन की तकनीकों की जानकारी देकर जागरूक किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मृगेन्द्र सिंह ने कहा कि उन्नत किस्मों और बेहतर फसल प्रबंधन से उत्पादन में वृद्धि हुई है, लेकिन कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव के कारण फसलों में विभिन्न कीट एवं रोगों का प्रकोप भी बढ़ रहा है। एक ही कीटनाशक के बार-बार उपयोग से कीटों में प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है। इसलिए किसानों को व्यावहारिक, यांत्रिक, जैविक और रासायनिक नियंत्रण विधियों का क्रमबद्ध एवं समन्वित उपयोग करना चाहिए। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति ने धान में सफेद माहू के बढ़ते प्रकोप की जानकारी देते हुए किसानों को फसल की नियमित निगरानी की सलाह दी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में 25 से 30 दिन पुरानी धान की फसल में सफेद माहू का प्रकोप देखा जा रहा है। प्रारंभिक अवस्था में नियंत्रण उपाय अपनाने से नुकसान को कम किया जा सकता है। सहायक संचालक कृषि कैलाश मगर एवं डॉ. दीपक चौहान ने मूंग, उड़द और अरहर में फली छेदक कीट के नियंत्रण के लिए फेरोमोन ट्रैप से नियमित निगरानी की सलाह दी। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी सी.बी. बागरी एवं कृषि विस्तार अधिकारी गोहपारू प्रीति पाटीदार ने किसानों को खरपतवारनाशी, फफूंदनाशी एवं कीटनाशकों के सुरक्षित उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने दवाओं का छिड़काव करते समय दस्ताने, मास्क, चश्मा, एप्रन एवं गमबूट पहनने तथा तेज धूप में छिड़काव से बचने की सलाह दी। साथ ही रसायनों को साफ पानी में निर्धारित मात्रा में घोलने, स्प्रेयर की नोजल बंद होने पर मुंह से न फूंकने और छिड़काव के बाद उपकरण को अच्छी तरह साफ करने के लिए भी जागरूक किया।

वैज्ञानिकों और कृषि अधिकारियों ने खरीफ फसलों का किया निरीक्षण

शिवपुरी। जिले में पिछले दिनों हुई अधिक वर्षा से खरीफ फसलों पर पड़े प्रभाव का जायजा लेने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र शिवपुरी के वैज्ञानिकों एवं विभागीय कृषि अधिकारियों की संयुक्त टीम ने विभिन्न गांवों का भ्रमण किया। टीम ने कोटा, भागोरा, करई, रायचंदखेड़ी, सिरसौद, राजा की मुढ़ेरी, सेमरी, गूगलीपुरा, सिंहनिवास, जसराजपुर, रामखेड़ी, रातौर, पीपरसमा, तानपुर सहित अन्य गांवों में टमाटर, सोयाबीन, धान, मूंगफली, उड़द एवं तिल की फसलों का निरीक्षण किया।

कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. पुनीत कुमार, डॉ. मुकेश कुमार भार्गव, डॉ. प्रशांत कुमार गुप्ता एवं डॉ. पुष्पेंद्र सिंह के साथ उप संचालक कृषि मुनेश शाक्य, कृषि यंत्री बी.एस. नरवरिया, उद्यानिकी अधिकारी जितेंद्र जाटव, ब्लॉक तकनीकी प्रबंधक रघुवीर यादव, ग्रामीण कृषि अधिकारी लखन गुर्जर तथा बीज निगम के प्रतिनिधि तुलाराम यादव ने फसलों की स्थिति का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान सोयाबीन एवं मूंगफली की फसल सामान्य स्थिति में मिली, जबकि उड़द में कहीं-कहीं पीला रोग तथा टमाटर की फसल में जैविक एवं अजैविक समस्याएं दिखाई दीं। वैज्ञानिकों ने किसानों को फसलवार आवश्यक प्रबंधन एवं बचाव के उपाय बताए। वैज्ञानिकों ने सोयाबीन में फफूंदजनित रोगों की रोकथाम के लिए अनुशंसित फफूंदनाशी का सुरक्षात्मक छिड़काव करने तथा पत्ती एवं फलियों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों की नियमित निगरानी की सलाह दी। टमाटर उत्पादन में कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए शुरू से ही समन्वित प्रबंधन अपनाने की सलाह दी गई। कृषि अधिकारियों ने किसानों को फसल सुरक्षा रसायनों का उपयोग निर्धारित मात्रा एवं पर्याप्त पानी के साथ करने की सलाह दी।

कृषि विभाग में 16 संयुक्त संचालक और 86 उप संचालकों की नवीन पदस्थापना

भोपाल। राज्य शासन ने कृषि विभाग में पदोन्नत अधिकारियों की नई पदस्थापना कर दी हैं। उप संचालक से संयुक्त संचालक तथा सहायक संचालक से उप संचालक पद पर पदोन्नत अधिकारियों के पदस्थापना आदेश जारी किए गए हैं। आदेश के अनुसार 16 संयुक्त संचालकों को विभिन्न संभागों एवं संचालनालय में पदस्थ किया गया है, जबकि 86 उप संचालकों को विभिन्न जिलों, संचालनालय, परियोजना संचालक आत्मा तथा कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केंद्रों में जिम्मेदारी सौंपी गई है। पदस्थापना की विस्तृत सूची इस प्रकार है-

संयुक्त संचालक कृषि

अधिकारी का नाम	वर्तमान पदस्थापना	नवीन पदस्थापना
मनोहर सिंह देवके	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला बुरहानपुर	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास नर्मदापुरम संभाग, नर्मदापुरम
राजेश चतुर्वेदी	म.प्र. राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल
जितेन्द्र कुमार सिंह	प्रभारी संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास इन्दौर	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास इन्दौर संभाग, इन्दौर
जितेन्द्र सिंह परिहार	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास शहडोल संभाग, शहडोल
यू.एस. तोमर	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास ग्वालियर संभाग, ग्वालियर
रामलाल जामरे	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला शाजापुर	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल
डॉ. सुशील कुमार निगम	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल
आलोक कुमार मीणा	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, सत्राटी, जिला खरगौन	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास भोपाल संभाग, भोपाल
रामसेवक शाक्यवार	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, मुरैना	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास चंबल संभाग, मुरैना
केशव सिंह खपेडिया	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल
कमल कुमार जैन	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल
डॉ. आनन्द कुमार बड़ोनिया	संचालनालय किसान कल्याण तथा कृषि विकास भोपाल	म.प्र. राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल (सेवायें प्रतिनियुक्ति पर सौंपी जाकर)
डॉ. अजय कुमार कौशल	प्रभारी कुल सचिव राजमाता विजयराजे सिंधिया कृषि विवि, ग्वालियर	प्रभारी कुल सचिव, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि, ग्वालियर, म.प्र.
बंडूसिंह जमर	परियोजना संचालक आत्मा समिति उज्जैन	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास रीवा संभाग, रीवा
संजय दोषी	उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला डिंडौरी	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास सागर संभाग, सागर
रामपाल सिंह नायक	प्रभारी संयुक्त संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास उज्जैन	संयुक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास उज्जैन संभाग, उज्जैन

उप संचालक कृषि

अधिकारी का नाम	वर्तमान पदस्थापना	नवीन पदस्थापना
सरनाम सिंह	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास भोपाल
ए.के. बिसेन	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास भोपाल
गजराज सिंह गोरख	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-दतिया	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, शिवपुरी
लक्ष्मीनारायण चौरसिया	प्रभारी प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र शिवपुरी	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र जावरा, जिला रतलाम
ग्यारसीलाल अहिरवार	कार्यालय उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास सीधी	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला दतिया
मुकेश कुमार प्रजापति	कार्यालय संयुक्त संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास सागर	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला सागर
उमेश कुमार कटहरे	कार्यालय संयुक्त संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास जबलपुर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला-जबलपुर
हरि प्रसाद भारती	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, भोपाल
फूलसिंह मालवीय	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला बालाघाट	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला बालाघाट
ज्ञानेन्द्र कुमार पचेरिया	प्रभारी उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला श्योपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला ग्वालियर
जगदीश नरवरिया	प्रभारी प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र अंतरी जिला-ग्वालियर	प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, अंतरी जिला ग्वालियर
खैरसिंह केन	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-उज्जैन	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-उज्जैन
सुरेन्द्र कुमार परहाते	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-बैतूल	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-सीधी
रवि कुमार आम्रवंशी	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-जबलपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला रायसेन
राम प्रसाद झारिया	प्रभारी प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र नरसिंहपुर	प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, नरसिंहपुर
कैलाश मगर	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-शहडोल	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला राजगढ़
गौरीशंकर बेले	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-भिण्ड	राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान बरखेड़ी कलां भोपाल
संजीव कुमार शाक्य	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
भगवान सिंह अर्गल	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-रतलाम	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-रतलाम
हनमंत राव प्रभाकर	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
त्रिभुवन भारती	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
श्रीमती नविता उरकुड़े श्रीवास्तव	कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-जबलपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति, नरसिंहपुर
प्रताप सिंह निगवाल	अनुविभागीय कृषि अधिकारी बड़वानी, जिला-बड़वानी	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-हरदा
शांतिलाल पंवार	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-बड़वानी	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-बुरहानपुर
सचिन राजीव दास	सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी छिंदवाड़ा, जिला-छिंदवाड़ा	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-सिवनी
परमानंद डाबर	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-अलीराजपुर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-अलीराजपुर
के.एस. झनिया	कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-धार	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-धार
रणजीत सिंह पटेल	सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी खरगोन जिला-खरगोन	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-सीहोर
श्रीमती अरुणिमा सेन	कार्यालय प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र जबलपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-डिण्डौरी
श्रीमती रचना शर्मा	उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला जबलपुर जिला-जबलपुर	प्रभारी कुलसचिव, जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि जबलपुर (प्रतिनियुक्ति)
अनंत बिहारी सडैया	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-मुरैना	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-मुरैना
श्याम बहादुर सिंह	उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला जबलपुर जिला-सागर	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, मुरैना
नरेश कुमार परमार	कृषि विपणन मंडी बोर्ड (प्रतिनियुक्ति पर)	कृषि विपणन मंडी बोर्ड (प्रतिनियुक्ति पर)
रामशंकर जाट	सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी खरगोन जिला-खरगोन	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला बुरहानपुर
राजकुमार सिंह	सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी, जिला-रतलाम	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला श्योपुर
डॉ. दिनेश कुमार सिंह	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
गोपेश पाठक	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-आगर-मालवा	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला आगर-मालवा
डॉ. अनिल कुमार मिश्रा	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-छतरपुर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-छतरपुर
उपेन्द्र कुमार शुक्ला	प्रभारी प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र- पवारखेड़ा जिला-नर्मदापुरम	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला सतना
ओमप्रकाश तिवारी	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-पन्ना	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-पन्ना
मनोज रघुवंशी	अनुविभागीय कृषि अधिकारी कोलारस, जिला-शिवपुरी	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, औबेदुल्लागंज जिला रायसेन
डॉ. आशुतोष पाण्डेय	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
डॉ. रविकांत सिंह	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-नर्मदापुरम	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-नर्मदापुरम
अजय कुमार परियानी	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
पियूष सोलंकी	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-खरगोन	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला आगर-मालवा
श्रीमती प्रतिभा गौरे	अनुविभागीय कृषि अधिकारी जबलपुर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला कटनी
राजेन्द्र कुमार द्विवेदी	अनुविभागीय कृषि अधिकारी सोनकच्छ जिला-देवास	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला मुरैना
कमलेन्द्र सिंह चौहान	पौध संरक्षण प्रयोगशाला जबलपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-देवास
डॉ. राजेश सिंह चौहान	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-सीधी	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-डिण्डौरी
डॉ. अनुराग पटेल	सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी शहडोल	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला अनूपपुर
डॉ. सुरेश कुमार	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-छतरपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-छतरपुर
डॉ. श्रीमती अनंता दीवान	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
डॉ. रामनाथ पटेल	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-कटनी	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला बालाघाट
राजेन्द्र प्रसाद परमार	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
डॉ. श्रीमती इंदिरा त्रिपाठी	अनुविभागीय कृषि अधिकारी पाटन जिला-जबलपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-जबलपुर
डॉ. रामवीर सिंह राजपूत	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल	संचालनालय, किसान कल्याण तथा कृषि विकास म.प्र. भोपाल
भानुप्रताप सिंह	प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र कुठलिया जिला-रीवा	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-रीवा
विलास राव पाटिल	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-देवास	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, सत्राटी जिला खरगौन
श्रीमती कीर्ति वर्मा	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-जबलपुर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला दमोह
श्रीमती रश्मि लाम्भाते (प्रचंड)	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-इंदौर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-भोपाल
दिनेश मण्डलोई	सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी नीमच	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-टीकमगढ़
मानसिंह ठाकुर	अनुविभागीय कृषि अधिकारी महेश्वर जिला-खरगोन	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-नीमच
कु. रजनी चौहान	कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-कटनी	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-कटनी
हीरा सिंह चौहान	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-झाबुआ	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला भिण्ड
श्रीमती अनीता धाकड़	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-मंदसौर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-मंदसौर
सुभावना चतुर्वेदी	राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान बरखेड़ी कलां भोपाल	कार्यालय राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरखेड़ी कलां भोपाल
अंबाराम मेडा	कार्यालय प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र रनगुआं जिला-सागर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-उमरिया
संतोष सिंह मौर्य	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-झाबुआ	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-बड़वानी
ओंकार सिंह बर्मन	कार्यालय उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-नीमच	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला शहडोल
प्रकाश ठाकुर	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-हरदा	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-हरदा
प्यार सिंह चौहान	कार्यालय प्राचार्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र सत्राटी जिला-खरगोन	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला उज्जैन
निर्भय सिंह पटेल	अनुविभागीय कृषि अधिकारी जिला-अलीराजपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला खरगौन
प्रियंका चंदेला	कार्यालय संयुक्त संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास जबलपुर	प्राचार्य, कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, जबलपुर
जवाहरलाल कास्दे	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-बुरहानपुर	परियोजना संचालक आत्मा समिति, जिला नर्मदापुरम
मोरिस नाथ	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-छिंदवाड़ा	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-छिंदवाड़ा
यतीन कुमार मेहता	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-नीमच	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-अशोकनगर
लाल सिंह चोरेले	सहायक भूमि संरक्षण अधिकारी जिला-झाबुआ	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-विदिशा
डॉ. प्रेम सिंह	म.प्र. राज्य जैविक प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल (सेवायें प्रतिनियुक्ति पर सौंपी जाकर)	म.प्र. राज्य जैविक प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल (सेवायें प्रतिनियुक्ति पर सौंपी जाकर)
सचिन जैन	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-विदिशा	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-विदिशा
भानुप्रताप शर्मा	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-ग्वालियर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-ग्वालियर
नितेश कुमार यादव	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-बैतूल	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला शाजापुर
संजय कुमार पाठक	बीज परीक्षण अधिकारी सागर	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-दमोह
संदीप कुमार यादव	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-इंदौर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला इंदौर
सुरेन्द्र अमरुते	कार्यालय परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-भोपाल	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास, जिला नरसिंहपुर
धीरज ठाकुर	प्रभारी परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-छिंदवाड़ा	परियोजना संचालक आत्मा समिति जिला-छिंदवाड़ा
अमित सिंह	प्रभारी उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-अशोकनगर	उप संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला-अशोकनगर

फसल अवशेष प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम ग्राम बीकर मेंआयोजित

दतिया। कृषि विज्ञान केंद्र, दतिया द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन योजनांतर्गत ग्राम बीकर में जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फसल अवशेष, विशेषकर धान की पराली, खेत में न जलाने तथा उसका उचित प्रबंधन कर खाद एवं अन्य उपयोगी संसाधनों के रूप में इस्तेमाल करने के लिए जागरूक करना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रमुख डॉ. अवधेश सिंह ने किसानों को खेत में पराली जलाने से होने वाले नुकसान की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि फसल अवशेष जलाने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है। साथ ही पराली से निकलने वाला धुआं वायुमंडल में प्रदूषण बढ़ाता है। उन्होंने किसानों से धान की पराली का उचित प्रबंधन कर उसे खेत के लिए उपयोगी बनाने की अपील की। योजना के नोडल अधिकारी डॉ. ए.के. सिंह ने किसानों को बताया कि वर्तमान में खेत में पराली प्रबंधन के लिए कई आधुनिक तकनीकें उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि स्मार्ट सीडर, सुपर सीडर, हैप्पी सीडर एवं जीरो टिलेज मशीन जैसी कृषि मशीनों की सहायता से धान की कटाई के बाद खेत में ही सीधे गेहूं एवं अन्य रबी फसलों की बुवाई की जा सकती है। इससे पराली जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती और किसानों को जुताई, पलेवा एवं अन्य कृषि कार्यों में होने वाले खर्च के साथ-साथ लगभग 15 से 20 दिन का समय भी बचाया जा सकता है। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, दतिया के वैज्ञानिक पवन दांगी सहित लगभग 90 किसानों ने भाग लिया। किसानों ने फसल अवशेष नहीं जलाने तथा उपलब्ध तकनीकों का उपयोग कर पराली का उचित प्रबंधन करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

मिट्टी को रोगों से बचाएंगे ट्राईकोडर्मा और स्यूडोमोनास

हरदा। कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा में किसानों के लिए ट्राईकोडर्मा और स्यूडोमोनास जैव उर्वरक उपलब्ध हैं। ट्राईकोडर्मा 294 रुपए प्रति लीटर और स्यूडोमोनास 321 रुपए प्रति लीटर की दर से विक्रय किया जा रहा है। केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. रूपचंद जाटव ने बताया कि इनका उपयोग फसलों में मिट्टी से होने वाले रोगों की रोकथाम के लिए किया जा सकता है। इनकी बिक्री 1 अक्टूबर 2026 के बाद नहीं की जा सकेगी, बीज उपचार के लिए 10 मिलीलीटर जैव उर्वरक प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करें। मिट्टी उपचार के लिए 2 लीटर प्रति एकड़ जैव उर्वरक को 50 किलो अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद में मिलाकर खेत में डालें। मिर्च, टमाटर और बैंगन जैसी सब्जियों में जड़ सड़न रोग की रोकथाम के लिए टपक सिंचाई से 2 लीटर प्रति एकड़ का उपयोग किया जा सकता है।

(पृष्ठ 6 का शेष)

बेहतर फसल-अधिक...

कभी-कभी अच्छा साफ सुन्दर व एक समान आकृति वाले बीज भी अन्दर से कटे-फटे, कीड़े व बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं। या फिर कई वर्षो के पुराने हो सकते हैं। ऐसे बीज भी किसान भाइयों को देख परख कर विश्वनीय स्थानों से ही क्रय करना चाहिये।

बीज की आयु

बीज का यह लक्षण यद्यपि किसानों के लिये अधिक महत्व का नहीं है, क्योकि बीज की अंकुरण क्षमता भण्डारण के तौर-तरीके तापमान एवं आद्रता की प्रतिशत मात्रा पर निर्भर करता है। यदि बीज का भण्डारण अच्छी तरह से साफ करके एवं भलि-भांति बीज को सुखाकर उचित तौर तरीके से भण्डारित किया गया हो तो बीज को काफी लम्बे समय तक बोने के लिये प्रयोग किया जा सकता है। विभिन्न फसलों के भण्डारण का अंकुरण पर जो प्रभाव देखा गया है, उसको तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है। जो इस प्रकार है।

प्रथम श्रेणी

इसमें वे फसलें आती हैं, जिनका बीज 1 से 2 वर्ष तक उपयुक्त वातावरण में भण्डारित करने से उनकी अंकुरण क्षमता 50प्रतिशत या उससे अधिक बनी रहती है, जैसे- सोयाबीन, ज्वार, कपास, सूरजमुखी, चना, मसूर, तम्बाखू, राई एवं प्याज आदि है।

द्वितीय श्रेणी

इसमें वे फसलें आती हैं, जिनका बीज करने पर भी अंकुरण क्षमता 50 प्रतिशत या उससे अधिक बनी रहती है, जैसे- गेंहू, धान, जौ, जई, मटर, बरसीम, सरसों, तरबूज, खरबूज, ककड़ी, खीरा, भिण्डी, कद्दू, मूली, पोस्ता पालक, आलू एवं समस्त भूमिगत कंद।

तृतीय श्रेणी

इसमें वे फसलें आती है, जिनका बीज उपयुक्त वातावरण में भण्डारित करने पर 5 वर्षों से अधिक समय तक रखने के उपरांत भी अंकुरण क्षमता 50 प्रतिशत से अधिक बना रहता है, जैसे- टमाटर।

बुवाई में प्रयुक्त होने वाला बीज बहुत अधिक पुराना नही होना चाहिये, अधिक से अधिक एक वर्ष पुराना बीज बुवाई के लिये सबसे उपयुक्त होता है, इससे अधिक आयु के बीजों की अंकुरण क्षमता व जीवन क्षमता काफी कम हो जाती है। पुराने बीजों को पहचानने में किसान भाई अक्सर धोखा खा जाते है लेकिन कुछ ऐसे भौतिक लक्षण है। जिनसे पुराने बीजो को भी आसानी से पहचाना जा सकता है। जैसे-नये बीज की अक्षेता पुराने बीज कम चमकिले होते है बदरंगा लगते है। ऐसा सतह की पॉलिश छूट जाने के कारण होता है। पुराने बीजों के समान ही नये बीजों में भी सुसुप्तावस्था होती है, जो अलग-अलग फसलों में अलग-अलग समय तक रहती है कुछ फसलों में ऐसा भी देख गया है, कि सुसुप्तावस्था बिल्कुल नहीं होती है।

कभी-कभी अच्छा अंकुरण क्षमता वाला बीज भी किसानों के खेतों पर कम उगता है जिसके निम्न कारण हो सकते है।

बीज का उचित गहराई में न पहुंचना

कई बार किसान भाइयों की बोनी दोषपूर्ण ढंग से होने के कारण या तो बीज बिल्कुल

ऊपर रह जाता है। या बहुत अधिक गहराई में चला जाता है, जिसके कारण उसका अंकुरण सम्भव नहीं हो पाता।

भूमि की भौतिक दशा

कई बार भूमि में उपयुक्त नमी नहीं होती (नमी या तो वांछित मात्रा से कम होती है, या अधिक होती है।) जिसके कारण बीज का अंकुरण नहीं हो पाता। कई बार ऐसा भी देखने को मिलता है, कि किसान भाई बतर आने के पूर्व ही खेत की जुताई कर देते हैं। या खेत पानी के स्त्रोत पर जैसे तालाब, नहर या बांध के किनारे हैं, और उसमें ऊपर के पानी रिसाव के कारण बतर नहीं आ पाता, परन्तु किसान को बोनी करनी है, इस कारण गीले खेत की जुताई करके उसमें बोनी कर देता है। ऐसी स्थितियों में भी बीज का अंकुरण रही एवं उपयुक्त मात्रा में नही होता है। क्योंकि गीली मिट्टी में वायु का संचार सही ढंग से नहीं हो पाता हे।

बीज को उचित मात्रा में हवा पानी एवं सूर्य का प्रकाश न मिलना

बीज को अंकुरित होने एवं बढ़ने के लिये हवा पानी एवे सूर्य की रोशनी की आवश्यकता होती है, इनमें से किसी भी कारण से कोई भी एक घटक यदि बीज को उपयुक्त मात्रा में नहीं मिल रहा है, तो बीज का अंकुरण प्रभावित होता है। और पौधे के बढ़वार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भूमि का तापमान उचित न होना

बीज के अंकुरण के समय भूमि का तापमान उपयुक्त होना चाहिये। यदि भूमि का तापमान आवश्यकता से अधिक है, या कम है, तो दोनों ही परिस्थितियों में अंकुरण पर विपरित प्रभाव पड़ता है। किसानों को बीज खरीदते समय उपरोक्त सभी सुझाये गये लक्षणों को ध्यान में रखकर ही खरीदी करनी चाहिये, जिससे की उसको अपनी मेहनत का पूरा-पूरा लाभ मिल सके एवं उत्पादन बढ़ सके। बीज खरीदने के उपरान्त बीज को सही समय एवं सही तरीके से बोनी करना भी महत्व है, क्योंकि सही समय पर बोनी न करने पर भी उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

बीज कहाँ से खरीदें

बीज हमेशा उचित, प्रमाणित व विश्वसनीय संस्था से ही खरीदना चाहिये। जिससे वांछित बीज उचित दामों पर मिल सके। बीज मिलने के उचित श्रोत निम्न है- क्रय-विक्रय सहकारी समितियां राष्ट्रीय बीज निगम, राज्य बीज निगम तथा इनकी अधिकृत दुकानें कृषि विश्वविद्यालय तथा कृषि प्रक्षेत्र, कृषि विभाग, कृषि विभाग में कार्यरत कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि ज्ञान केन्द्रों, से सम्पर्क कर भली प्रकार जानकारी हासिल करें एवं कृषि की नवीनतम तकनीकी को को अपनाते हुये अपनी कास्त करें, ताकि किसान को अपनी सीमित साधनों का भरपूर दोहन कर उत्पादन के स्तर में वृद्धि कर सकें।

कृषि चुनौतियों से निपटने में आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान की अहम भूमिका

रायपुर। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रायपुर स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान के अनुसंधान एवं किसान हितैषी तकनीकी पहलों की सराहना की।

रायपुर पहुंचने पर श्री चौहान ने आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय से मुलाकात की। डॉ. राय ने संस्थान में फसलों को कीट-व्याधियों, रोगों और अन्य जैविक तनावों से होने वाले नुकसान को कम करने के लिए किए जा रहे अनुसंधान, तकनीकी हस्तक्षेपों और नवाचारों की जानकारी दी। उन्होंने राज्य के कृषि विभाग के साथ समन्वय से किसानों की उत्पादकता, कृषि की प्रतिरोधक क्षमता और आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों से भी अवगत कराया।

श्री चौहान ने कहा कि छत्तीसगढ़ में स्थापित आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने उभरती कृषि चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान, नवाचार और प्रौद्योगिकी विकास को आवश्यक बताते हुए संस्थान के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों, नवाचारों एवं किसान-केंद्रित पहलों को देखने के लिए निकट भविष्य में आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान का दौरा करने की इच्छा भी व्यक्त की। यह मुलाकात केंद्र एवं राज्य सरकार तथा आईसीएआर के बीच कृषि अनुसंधान को मजबूत करने, फसल तनावों के प्रभावी प्रबंधन और किसानों के कल्याण के लिए समन्वित प्रयासों को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण रही।

(पृष्ठ 5 का शेष)

सोयाबीन में समन्वित ...

रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग एवं सावधानियाँ

रासायनिक कीट नियंत्रण का प्रयोग तभी करना चाहिए, जब कीट प्रकोप से होने वाली संभावित आर्थिक क्षति की तुलना में कीटनाशक के प्रयोग से होने वाला आर्थिक लाभ अधिक होने की संभावना हो।

रासायनिक कीट नियंत्रण से समुचित एवं प्रभावी लाभ प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

- फसल में कीट प्रकोप की स्थिति एवं आर्थिक क्षति स्तर के आधार पर ही रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- कीट की अवस्था, प्रकोप की तीव्रता तथा फसल की अवस्था के अनुसार अनुशंसित कीटनाशक का उचित समय पर प्रयोग करें।
- एक समय में अनुशंसित कीटनाशकों में से किसी एक कीटनाशक का ही प्रयोग करें।
- कीटनाशक की अनुशंसित मात्रा से अधिक प्रयोग न करें।
- छिड़काव के लिए साफ पानी तथा उचित एवं अच्छी तरह कैलिब्रेट किए गए स्प्रेयर का उपयोग करें।
- कीटनाशकों के प्रयोग के दौरान लेबल पर दिए गए निर्देशों एवं सुरक्षा सावधानियों का पालन करें।
- मित्र कीटों एवं पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव डालने वाले अनुशंसित विकल्पों को प्राथमिकता दें।

विभिन्न कीटों के प्रभावी नियंत्रण हेतु अनुशंसित कीटनाशकोंए उनकी निर्धारित मात्रा एवं प्रयोग के उचित समय का विवरण निम्नानुसार है-

- तना मक्खी एवं सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु निम्न में से किसी एक अनुशंसित कीटनाशक का छिड़काव करें।
- थायमेथोक्साम 12.6 प्रतिशत + लैम्ब्डा-सायहेलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत जेडसी (पूर्व-मिश्रित कीटनाशक) / 125 मिली प्रति हेक्टेयर।
- बीटा-सायफ्लूथ्रिन + इमिडाक्लोप्रिड (पूर्व-मिश्रित कीटनाशक) / 350 मिली प्रति हेक्टेयर>
- आइसोसायक्लोसेरम 9.2 प्रतिशत डीसी / 600 मिलीलीटर प्रति हेक्टेयर।
- थायमेथोक्साम 30 एफएस / 10 मिली प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें।

नीला भृंग एवं गर्डल बीटल के नियंत्रण हेतु निम्न में से किसी एक अनुशंसित कीटनाशक का प्रयोग करें-

- थायोक्लोप्रिड 21.7 प्रतिशत एससी/ 750 मिली प्रति हेक्टेयर। ▸ टेट्रानिलीप्रोल 18.8 प्रतिशत एससी / 250-300 मिली प्रति हेक्टेयर।
- क्लोरएंट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एससी / 150 मिली प्रति हेक्टेयर।
- एमामेक्टिन बेंजोएट / 425 मिली प्रति हेक्टेयर।

पत्ती खाने वाली इल्लियों (सेमीलूपर, तंबाकू की इल्ली एवं चने की इल्ली) तीनों इल्लियों के एक साथ नियंत्रण के लिए निम्न में से किसी एक अनुशंसित कीटनाशक का प्रयोग करें-

- स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एससी / 450 मिली प्रति हेक्टेयर।
- क्लोरएंट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एससी / 150 मिली प्रति हेक्टेयर।
- क्लोरएंट्रानिलीप्रोल 9.3 प्रतिशत +लैम्ब्डा.सायहेलोथ्रिन 4.6 प्रतिशत जेड सी/ 200 मिली प्रति हेक्टेयर।
- इंडोक्साकार्ब 15.8% एससी / 333 मिली प्रति हेक्टेयर।

सोयाबीन में कीटनाशक छिड़काव के लिए महत्वपूर्ण सावधानियां

- कीटनाशक का छिड़काव कीट के प्रारंभिक प्रकोप की अवस्था में पर्याप्त पानी की मात्रा के साथ समान रूप से करें।
- सोयाबीन में कीटनाशक के समान एवं प्रभावी फैलाव तथा वांछित नियंत्रण के लिए उचित मात्रा में पानी का उपयोग आवश्यक है। नेपसैक स्प्रेयर से प्रति हेक्टेयर लगभग 500-600 लीटर पानीए जबकि पावर पंप से प्रति हेक्टेयर लगभग 300-350 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।
- कीटनाशक के बेहतर फैलाव एवं पौधे के विभिन्न भागों तक समान रूप से पहुँचने के लिए कोन नोजल का उपयोग उपयुक्त रहता है।
- कीटनाशक का छिड़काव सुबह या शाम के समय करना चाहिए। दोपहर के समय मधुमक्खियों सहित अनेक परागणकारीए परजीवी एवं परभक्षी मित्र कीट अधिक सक्रिय रहते हैं। इस समय छिड़काव करने से इन लाभकारी कीटों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतः मित्र कीटों के संरक्षण एवं कीटनाशक की प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए सुबह या शाम के समय ही छिड़काव करें।

(पृष्ठ 8 का शेष)

स्मार्ट किसान की स्मार्ट खेती...

कटाई का सही समय भी मौसम देखकर तय करें

फसल तैयार होने पर केवल कैलेंडर देखकर कटाई न करें। फसल की परिपक्वता, मौसम, फसल की नमीए मजदूर/मशीन की उपलब्धता, बाजार। इन सभी बातों को देखकर कटाई की योजना बनाएं। विशेषकर कटाई के समय बारिश की संभावना हो तो मौसम की जानकारी पहले से लेकर सुखाने और भंडारण की तैयारी करें।

फसल बीमा

बदलते मौसम में फसल नुकसान का जोखिम बना रहता है। इसलिए बीमा को खेती की जोखिम प्रबंधन योजना का हिस्सा बनाना उपयोगी है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना योजना के अंतर्गत फसल बीमा से संबंधित डिजिटल सेवाएं उपलब्ध हैं।

PMFBY Farmer App/Portal:PMFBY Farmer App/Portal के माध्यम से उपलब्ध बीमा सेवाओं, आवेदन, प्रीमियम और आवेदन की स्थिति जैसी जानकारी देखी जा सकती है। बीमा कराने से पहले अपने क्षेत्र में लागू फसल, नियम और अंतिम तिथि की जानकारी लें। फसल नुकसान होने पर लागू नियमों के अनुसार निर्धारित प्रक्रिया और समय में सूचना दें।

- **WINDS प्रणाली:** फसल बीमा व्यवस्था में मौसम संबंधी आंकड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। WINDS प्रणाली जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से मौसम संबंधी आंकड़ों का उपयोग किया जाता है।

बाजार में सही बिक्री

e-NAM App/Portal:e-NAM App/Portal कृषि बाजार की कीमतए आवक और व्यापार संबंधी जानकारी प्राप्त करने में सहायता करता है।किसान मंडी जाने से पहले

उपलब्ध बाजार जानकारी देख सकता है। लेकिन केवल भाव देखकर निर्णय न लें। परिवहन खर्चए गुणवत्ताए स्थानीय मंडी की स्थितिए भंडारण और वास्तविक खरीद मूल्य को भी ध्यान में रखें।

हर मौसम का लागत और मुनाफा लिखें

स्मार्ट खेती का सबसे जरूरी हिस्सा है- अपनी खेती का हिसाब रखना। कुल लागत, सकल आय एवं अनुमानित शुद्ध आय। हर मौसम के अंत में यह हिसाब करें कि किस काम पर कितना खर्च हुआ और नई तकनीक से वास्तव में कितना लाभ मिला। यही रिकॉर्ड अगले मौसम की बेहतर योजना बनाने में सबसे उपयोगी जानकारी बन सकता है।

स्मार्ट किसान के 10 नियम

- मौसम देखकर कृषि कार्यों की योजना बनाएं।
- बुवाई से पहले मिट्टी की जांच करवाएं।
- फसल और किस्म का चयन स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार करें।
- मिट्टी की नमी और फसल की आवश्यकता के अनुसार सिंचाई करें।
- फसल की नियमित निगरानी करें।
- एआई को निर्णय-सहायक मानें, अंतिम निर्णयकर्ता नहीं।
- अनावश्यक उर्वरक और कृषि-रसायनों के खर्च से बचें।
- जहां जरूरी हो, ड्रोन और सेंसर की सेवा लें।
- बाजार की जानकारी लेकर बिक्री की योजना बनाएं।
- हर मौसम का लागत, उत्पादन और बिक्री रिकॉर्ड सुरक्षित रखें।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।

★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।

★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।

★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।

★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)

फोन : (0755) 4233824

मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

दीवटिया में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री मुकेश नागर

नागर कृषि सेवा केन्द्र दीवटिया, जिला-रायसेन (म.प्र.) मो. 9589277415

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स

(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

•औषधीय•वन •सब्जी•फूल•बीज•स्प्रे पंप एवं पार्ट्स •कीटनाशक •जैविक खाद • गार्डन टूल •जैविक उत्पाद •ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - •निर्मल सीड्स, जलगांव •कलश सीड्स, जालाना •अंकुर सीड्स, नागपुर • वेस्टर्न सीड्स, गुजरात •दिनाकर सीड्स, गुजरात •सटिंड सीड्स, दिल्ली • फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना •स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई •जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर •स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर •अनु प्रोडक्ट्स लि. •श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)

फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

(पृष्ठ 7 का शेष)

कैसे लें टमाटर की...

- खेत की नियमित निगरानी करें।
- आवश्यकता होने पर पंजीकृत कीटनाशक का प्रयोग करें।

प्रमुख रोग एवं उनका प्रबंधन

- **अगेती झुलसा:** पत्तियों पर भूरे रंग के गोलाकार धब्बे बनते हैं। अधिक प्रकोप में पत्तियाँ सूखने लगती हैं।
- **दवा:** कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी./ 3 ग्राम/लीटर पानी अथवा मेटालेक्सिल 4 प्रतिशत+मैन्कोजेब 64 प्रतिशत डब्ल्यूपी / 1.5 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर लक्षण दिखाई देने पर आवश्यकता के अनुसार छिड़काव करें।
- **पछेती झुलसा:** पत्तियों एवं तनों पर जलसिक्त भूरे-काले धब्बे बनते हैं तथा अनुकूल मौसम में रोग तेजी से फैलता है।
- **दवा:** साइमोक्सानिल +मैन्कोजेब / 2 ग्राम/लीटर पानी अथवा पाइराक्लोस्ट्रोबिन + मेटिराम / 2 ग्राम/लीटर पानी में मिलाकर उपयोग करें।
- **टमाटर पर्ण कुंचन:** पत्तियां छोटी होकर ऊपर की ओर मुड़ जाती हैं तथा पौधे की वृद्धि रुक जाती है। फूल एवं फल कम लगते हैं।

प्रबंधन

- रोगग्रस्त पौधों को तुरंत उखाड़कर नष्ट करें।
- सफेद मक्खी का नियंत्रण करें।
- पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएं।
- स्वस्थ एवं रोगरोधी/सहनशील किस्मों का चयन करें।
- रोगग्रस्त पौधों को खेत में न छोड़ें।
- **टमाटर मोजेक वायरस:** पत्तियों पर हल्के एवं गहरे हरे रंग का चितकबरापन दिखाई देता है। पत्तियाँ छोटी एवं विकृत हो सकती हैं।

प्रबंधन

- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें।
- स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।
- खेत एवं आसपास खरपतवार मुक्त रखें।
- संक्रमित पौधों को छूने के बाद स्वस्थ पौधों को न छुएँ।
- खेत में स्वच्छता एवं फसल चक्रअपनाएँ।
- **जीवाणु मुरझान:** पौधे की पत्तियाँ मुरझाने लगती हैं और अधिक प्रकोप में पूरा पौधा सूख सकता है।

प्रबंधन

- रोगग्रस्त पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट करें।
- उचित जल निकास रखें।
- स्वस्थ पौध का प्रयोग करें।
- फसल चक्र अपनाएँ।
- रोगग्रस्त खेत से मिट्टी एवं पौध सामग्री दूसरे खेत में न ले जाएँ।
- **आर्द्र गलन / डैम्पिंग-ऑफ:** नर्सरी में छोटे पौधे मिट्टी की सतह के पास से गलकर गिर जाते हैं।

प्रबंधन

- नर्सरी में जल निकास अच्छा रखें।
- अत्यधिक सिंचाई न करें।
- स्वस्थ एवं उपचारित बीज का प्रयोग करें।
- रोगग्रस्त पौधों को तुरंत निकालकर नष्ट करें।

विशेष सुझाव

- फूल आने से पहले से नियमित खेत निरीक्षण करें।
- फल छेदक के लिए फेरोमोन ट्रैप लगाएँ।
- क्षतिग्रस्त फल नियमित रूप से तोड़कर नष्ट करें।
- सफेद मक्खी के लिए पीले चिपचिपे ट्रैप लगाएँ।
- रोगग्रस्त पौधों को तुरंत खेत से बाहर करें।
- नीम आधारित उत्पाद एवं जैव-नियंत्रण एजेंटों को प्राथमिकता दें।
- कीटनाशक का छिड़काव /आर्थिक क्षति स्तर एवं आवश्यकता के आधार पर करें, कैलेंडर आधारित अनावश्यक छिड़काव से बचें।

रोकथाम के लिये

- रोपणी की भूमि भुरभुरी एवं अच्छे जल निकास वाली होनी चाहिए।
- रोपणी क्षेत्र का सोलेराइजेशन (सूर्य उपचार) करें या रोग की आशंका क्षेत्र को बीज बोने के 20 से 25 दिन पूर्व 2 प्रतिशत फार्मेलिन से उपचारित करें।
- बीज उपचार थाइरम 1.5 ग्राम+बाविस्टीन 1.5 ग्राम या इकोफिट 4 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज के हिसाब से करें।
- प्रकोप की अवस्था में ब्लाइटॉक्स 50 की 2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।

फल तुड़ाई

- टमाटर के फलों की तुड़ाई उसके उपयोग के अनुसार करना चाहिये।
- परिपक्व हरे फलों को दूर बाजार में भेजने के लिये तोड़ना चाहिये।
- पिंक स्टेज के फलों को लोकल बाजार में भेजने के लिये तोड़ना चाहिये।
- पके फलों को घर में उपयोग के लिये तोड़ना चाहिये।
- पूरी तरह पके फलों को तभी तोड़े जब फल 24 घण्टे में सरंक्षित पदार्थ बनाने में उपयोग हो।
- **उपज:** टमाटर की उपज, किस्म, भूमि के प्रकार, सिंचाई, रोपाई के समय, पौध संरक्षण और कीट एवं बीमारियों के प्रकोप पर निर्भर करती है। समान्यत: टमाटर की औसतन उपज 200-300 क्विंटल प्रति हेक्टर मिलती है।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत ➡ मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16,ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 16 (म.प्र.) फोन- 0755- 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम..............................पोस्ट..............................तहसील..............................

जिला..............................राज्य..............................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

वार्षिक	: 700/-	द्विवार्षिक	: 1300/-
त्रिवार्षिक	: 1900/-	पंचवर्षीय	: 3100/-
दसवर्षीय	: 6100/-	आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)........................ (शब्दों में)........................

बैंक का नाम........................ ड्राफ्ट चेक क्रमांक........................

दिनांक........................ संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान........................ प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक........................ एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

उन्नत तकनीक और गुणवत्तापूर्ण बीज से बढ़ेगी किसानों की आयः डॉ. यादव

बलराम कृषि महोत्सव के कार्यक्रम में वीसी के माध्यम से किसानों से जुड़े मुख्यमंत्री

भोपाल। बलराम कृषि महोत्सव के अवसर पर निवाड़ी में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव नई दिल्ली से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किसानों से जुड़े और संवाद किया। उन्होंने कहा कि किसानों को उन्नत कृषि तकनीक, गुणवत्तापूर्ण बीज और बेहतर कृषि सुविधाएं उपलब्ध कराकर उनकी आय में वृद्धि करना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। कृषि को केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि किसानों के लिए लाभ का व्यवसाय बनाया जाना चाहिए। डॉ. यादव ने कहा कि कृषि क्षेत्र आने वाले समय में प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मजबूत स्तंभ और सबकी समृद्धि की सबसे बड़ी गारंटी बनने जा रहा है। किसान दुग्ध उत्पादन, श्रीअन्न, मत्स्य पालन और उद्यानिकी सहित अपनी रुचि के क्षेत्रों में नई शुरुआत करें। सरकार

खेत से लेकर फैक्ट्री तक किसानों के साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। किसानों की आय बढ़ाने और खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए उन्नत बीज, आधुनिक कृषि यंत्र, नई तकनीक और वैज्ञानिक पद्धतियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्राकृतिक एवं जैविक खेती को प्रोत्साहित करते हुए कम लागत में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए किसानों को प्रेरित किया जा रहा है। डॉ. यादव ने कहा कि किसानों को सिंचाई और बिजली जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ कृषि अधोसंरचना को भी मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने किसानों से कृषि वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लेकर आधुनिक तकनीकों को अपनाने का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने बताया कि किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण की सुविधा दी जा रही है। खरीफ एवं रबी फसलों के लिए ऋण चुकाने की अवधि छह-छह माह से बढ़ाकर एक वर्ष कर दी गई है। प्रदेश में ढाई करोड़ किसानों को सब्सिडी पर बीज उपलब्ध कराया गया है। कार्यक्रम में संरक्षित खेती, औषधीय खेती, कस्टम हायरिंग सेंटर, कृषि यंत्र अनुदान, डेयरी, गौ-मैत्री योजना, प्राकृतिक खेती एवं मत्स्य बीज उत्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले निवाड़ी जिले के आठ प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया।

उपभोक्ता संघ के माध्यम से मिलेगा ग्लूटेन फ्री गेहूं बीजः श्री सारंग

राज्य सहकारी बीज उत्पादक एवं विपणन संघ की संचालक मंडल बैठक में लिये निर्णय

भोपाल। सहकारिता मंत्रीविश्वास सारंग ने निर्देश दिए हैं कि किसानों एवं उपभोक्ताओं को उपभोक्ता संघ के माध्यम से ग्लूटेन फ्री गेहूं का बीज उपलब्ध कराया जाए। उन्होंने कहा कि बीज संघ को पारंपरिक कार्यप्रणाली से आगे बढ़ाते हुए व्यावसायिक सोच के साथ नए क्षेत्रों में काम करना होगा। श्री सारंग मध्यप्रदेश राज्य सहकारी बीज उत्पादक एवं विपणन संघ मर्यादित के संचालक मंडल की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

बैठक में बीज संघ के मुख्यालय के लिए अन्यत्र भवन लेने की अनुमति प्रदान की गई। श्री सारंग ने निर्देश दिए कि आगामी छह माह के भीतर बीज संघ का नया कार्यालय स्थापित करने की प्रक्रिया पूरी की जाए। उन्होंने संघ की वित्तीय गतिविधियों के आकलन के लिए आउटसोर्स के माध्यम से चार्टर्ड अकाउंटेंट की सेवाएं लेने तथा संघ की उपविधियों (बायलॉज) की समीक्षा के लिए समिति गठित करने के निर्देश भी दिए। बीज संघ को बिजनेस मॉड्यूल पर कार्य करते हुए आकर्षक व्यावसायिक योजना तैयार करनी चाहिए। संघ की गतिविधियों और उपलब्ध सेवाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए सोशल मीडिया के माध्यम से प्रभावी अभियान चलाने हेतु एजेंसी की सेवाएं लेने के निर्देश भी दिए गए। बैठक में प्रबंध संचालक एम.के. दीक्षित ने विभिन्न विषयों को बिंदुवार प्रस्तुत किया। संचालक मंडल को हाइब्रिड मक्का, उद्यानिकी एवं सब्जी बीज तथा ग्लूटेन फ्री गेहूं के बीज के उत्पादन और विपणन की जानकारी दी गई। बताया कि इन बीजों को निजी क्षेत्र की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत कीमत पर उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। संचालक मंडल ने इस पहल की सराहना करते हुए अधिक से अधिक हाइब्रिड फसलों के उत्पादन कार्यक्रम लेने का निर्णय लिया। साथ ही ग्लूटेन फ्री गेहूं एवं सब्जी बीज के विक्रय के लिए उपभोक्ता सहकारी संघ तथा अन्य संस्थानों के साथ एमओयू करने पर सहमति बनी। बैठक में आगामी आमसभा में प्रस्तुत किए जाने वाले विभिन्न विषयों का अनुमोदन किया गया।

डॉ. नम्रता द्विवेदी को मिला पेटेंट

रीवा। कृषि महाविद्यालय, रीवा में गेस्ट फैकल्टी के रूप में कार्यरत डॉ. नम्रता द्विवेदी को प्लांट गैस रिलीज मॉनिटरिंग डिवाइस के लिए पेटेंट प्राप्त हुआ है। यह उपकरण पौधों से निकलने वाली गैसों की निगरानी एवं

अध्ययन में उपयोगी है। उनकी यह उपलब्धि कृषि अनुसंधान, नवाचार और एग्रीकल्चरल टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मानी जा रही है। इस उपलब्धि पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. त्रिपाठी ने डॉ. नम्रता द्विवेदी को बधाई देते हुए उनके अनुसंधान प्रयासों की सराहना की और भविष्य के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं। महा. के विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एम. मौर्य सहित डॉ. ए.के. पांडेय, डॉ. आर.के. तिवारी, डॉ. आर.पी. जोशी, डॉ. वी.के. सिंह, डॉ. एस.एम. कुर्मवंशी, डॉ. राजेश सिंह, डॉ. बी.के. तिवारी, डॉ. ए.के. पटेल, डॉ. के.सी. सिंह, डॉ. सी.जे. सिंह, डॉ. टी.के. सिंह, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. मनीषा द्विवेदी, डॉ. राधा सिंह, डॉ. स्मिता सिंह, डॉ. प्रदीप मिश्रा, डॉ. जी.डी. शर्मा, डॉ. ए.के. गिरी, डॉ. शिवानी तिवारी, डॉ. संजय सिंह, डॉ. के.एस. बघेल, डॉ. दिव्या सिंह, डॉ. सुधांशु पांडेय, डॉ. गुफरान सहित महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने भी उन्हें हार्दिक बधाई और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय पहलः श्री अहिरवार

भोपाल। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री दिलीप सिंह अहिरवार ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में लगातार प्रभावी कार्य कर रहा है। इंदौर की स्वच्छता, सतत अपशिष्ट प्रबंधन और कार्बन क्रेडिट जैसी पहल प्रदेश की उपलब्धियों को दर्शाती हैं। राज्य में लगभग 7.6 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छ वायु दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अहिरवार ने कहा कि स्वच्छ परिवहन, इलेक्ट्रिक वाहन, नवीकरणीय ऊर्जा और हरित शहरी विकास के क्षेत्र में भी प्रदेश आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ हवा सभी की साझा जिम्मेदारी है। प्रभावी नीतियों के लिए जिलेवार एवं क्षेत्रवार वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक हैं। यह

रिपोर्ट नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और विभागों के लिए उपयोगी मार्गदर्शिका साबित होगी। कार्यक्रम में एप्को के कार्यपालन संचालक हर्षल पंचोली सहित विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञ उपस्थित रहे। विशेषज्ञों ने वायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वायु गुणवत्ता और ट्रांसबाउंड्री वायु प्रदूषण से जुड़े विषयों पर तकनीकी जानकारी दी।

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 11 सितंबर 2026 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	811.8	823.5	-1
अलीराजपुर	384.8	781.6	-51
अशोकनगर	673	778.9	-14
बड़वानी	493	594	-17
बैतूल	626.5	945.6	-34
भिंड	727.9	560.5	30
भोपाल	974.1	882.2	10
बुरहानपुर	730.7	659.6	11
दतिया	723.3	684.2	6
देवास	719.2	826.9	-13
धार	415.2	723.2	-43
गुना	922.9	873.3	6
ग्वालियर	713.2	654.8	9
हरदा	642.6	1001	-36
इंदौर	566.4	783.3	-28
झाबुआ	499.4	802.6	-38
खंडवा	628.6	706.4	-11
खरगोन	661.9	642	3
मन्दसौर	652.9	768.7	-15
मुरैना	541.2	595.8	-9
नर्मदापुरम	749.1	1166.2	-36
नीमच	618.5	727.2	-15
रायसेन	795.4	997.2	-20
राजगढ़	939.2	832	13
रतलाम	516.9	843.6	-39
सीहोर	832.9	985	-15
शाजापुर	663.1	833.5	-20
श्योपुर	738.4	625.5	18
शिवपुरी	912.4	730.1	25

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
उज्जैन	583.6	815	-28
विदिशा	750.6	951.7	-21
पश्चिमी म.प्र.	693.9	803.8	-14
अनूपपुर	988.7	899.2	10
बालाघाट	1015.4	1133.5	-10
छतरपुर	925.4	865.2	7
छिंदवाड़ा	694.3	935.1	-26
दमोह	904.7	999.9	-10
डिंडोरी	1020	1091	-7
जबलपुर	868.9	1043.2	-17
कटनी	808.3	869.4	-7
मंडला	1057	1102.8	-4
नरसिंहपुर	892	965.2	-8
निवाड़ी	1148.7	727.1	58
पन्ना	1044	992.5	5
रीवा	776.8	900.2	-14
सागर	803.7	978.5	-18
सतना	1259.8	859.7	47
सिवनी	756.1	926.4	-18
शहडोल	1096.4	901.8	22
सीधी	1105.6	944.1	17
सिंगरौली	1038.9	935.1	11
टीकमगढ़	875.4	844.6	4
उमरिया	1048.2	975.5	7
मैहर	1028.7	883.6	16
मऊगंज	1377.9	873.7	58
पांढुर्णा	542.6	724.2	-25
पूर्वी म.प्र.	938.9	952.9	-1
म.प्र. योग	800.3	868.6	-8

(स्रोत : मौसम विभाग)

कम डाउन पेमेंट ₹5 999/-^

Hero GoodLife चांदी का सिक्का जीतने का मौका*

pine labs कैशबैक ₹5000/- तक#

टोल फ्री 1800 266 0018

Hero MotoCorp Ltd, Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No. 2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase - II, New Delhi-110070, India. CIN: L35911DL1984PLC017354. For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorised outlet or CALL TOLL-FREE 1800 266 0018 or visit us on www.heromotocorp.com. Accessories and features shown may not be part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two wheeler. ^Finance offers are at the sole discretion of the financier, subject to documentation. *Offer valid only on purchase of new Hero Two Wheeler & Hero GoodLife Enrollment on the corresponding purchase till 10th Sep. 2026. #The Cashback of 5% upto ₹5000 is applicable on the transaction between ₹30,000 to ₹1,00,000. The new revised ex-showroom price is valid for a limited period only. Hero MotoCorp reserves the right to modify or withdraw any or all offers without prior notice. ~Onroad price of HF Deluxe Self start variant applicable in Madhya Pradesh. *Terms & Conditions apply.

अधिकृत डीलर: भोपाल: वरेण्यम हीरो (प्रभात पेट्रोल पंप, हमीदिया रोड 9289922466, नं.जी. रोड 8959905381), साँई हीरो (डी.आई.जी. बंगला, बैरसिया रोड) 9289922685, यूनाइटेड हीरो (कोहेफिजा) 9289923150, इंदौर: कृष्णमणी हीरो (अन्नपूर्णा रोड) 9289922719, वी.एस. हीरो (एयरपोर्ट रोड) 9289923081, तेजी ऑटोमोबाइल्स (भवरकुआँ) 9289923211, टस्कानी ऑटोमोटिव (एलआईजी चौराहा के पास) 8871444414, मेहता ऑटोमोबाइल्स (देवास नाका), 9827748577, ग्वालियर: रतुस्का हीरो (सिटी सेन्टर 9289922371, मुरार 4088828, कम्पू 4072000), रतन मंगल हीरो (फूलबाग 9289922483, लश्कर बिरला 2438634), जबलपुर: कुमार हीरो (आजाद बिल्डिंग मार्केट) 9289922360, सुदर्शन हीरो (नेपियर टाउन 9289922353, मदन महल 9111100352, दमोह नाका 9111100344), उज्जैन: शिप्रा हीरो (फ्रीगंज, देवास रोड) 9289922354, लोहिया हीरो (गिरधरगंज नदी के सामने) 9289922718, बैतूल: खण्डेलवाल हीरो, 9289922624, सीहोर: मंत्री हीरो (कन्हैयालाल मंत्री पेट्रोल पंप, इंदौर नाका) 9522257587, ब्यावरा: आनंद हीरो 9289922871, गुना: गगन हीरो 9289922358, अशोक नगर: आस्था हीरो 9821743289, होशंगाबाद: पुण्यशीला हीरो 9289922380, हरदा: राहुल हीरो 9289922491, विदिशा: पाल हीरो 9289922379, दमोह: इण्डिया ऑटो हीरो 9289922573, सागर: टेम्पल हीरो (भगवानगंज, मकरोनिया) 9289922376, टीकमगढ़: आनंद हीरो 9289923112, छतरपुर: आनंद हीरो (झांसी रोड 9289922374, पन्ना रोड 7389238472), बड़वानी: शर्मा हीरो 9289922742, बुरहानपुर: श्रीनी हीरो 9289922372, देवास: सुखमा हीरो (ए.बी. रोड 9289922488, गंगानगर 8893096392), धार: साक्षी हीरो 9289922618, हाट पिपल्या: श्रीराम हीरो 9289923154, झाबुआ: नाकोड़ा हीरो 9289922679, कुक्षी: अन्नपूर्णा हीरो 9289922749, खण्डवा: उत्कर्ष हीरो 9289923018, खरगोन: निमाड़ हीरो 9289922378, महू: लक्ष हीरो 9289923176, पीथमपुर: रघुवंशी हीरो 9289923047, सनावद: राजेश हीरो 9289922774, बालाघाट: जायसवाल हीरो 9289922572, छिन्दवाड़ा: सत्कार हीरो 9289922805, मण्डला: शुभा हीरो 9289922800, नरसिंहपुर: रचना हीरो 9289922377, रीवा: चंद्रिका हीरो (टी.पी. नगर 9752283333, इलाहाबाद रोड 9171705391), सतना: स्टार हीरो 9289922366, वंदिका हीरो 9289923108, शहडोल: विनोद हीरो 9289923109, गुप्ता हीरो 9289922370, कटनी: हर्ष हीरो 9289923166, मैहर: कुन्दन हीरो 9289922743, बजरंग मोटर्स 7354558000, सीधी: राजेन्द्र मोटर्स 9289923113, सिंगरौली: सुदर्शन हीरो 9821745435, गोहद: श्रीजी ऑटोमोबाइल्स, 9821749342, भिण्ड: शिवम हीरो 9289922787, दतिया: शिव हीरो 9289923172, मुरैना: गगन हीरो 9289922678, श्योपुर: आशीष हीरो 9289922832, शिवपुरी: रघुवंशी हीरो 9289922571, राजगढ़: स्वास्तिक हीरो 9289922773, शाजापुर: बाबा हीरो 9289922833, रतलाम: एक्सीलेन्ट हीरो (महू रोड 9289922375, सैलाना रोड 07412-408800) नीमच: उत्तम हीरो 9289922367, मन्दसौर: राजदर्शन हीरो 9289922369, जावरा: रिलायबल हीरो 9289923045.

रायपुर: छत्तीसगढ़ हीरो 9289922351, आदर्श हीरो 9289922864, राजनांदगांव: जय हीरो 9289922357, धमतरी: सत्योम हीरो 9289922626, कांकेर: राहुल हीरो 9289922834, महासमुंद: पारस हीरो 9289922623, बलौदाबाजार: अग्रवाल हीरो 9289922950, आरंग: श्री राम हीरो 9289922968, बेमेतरा: श्री साईं हीरो 9289922835, कवर्धा: सरस्वती हीरो 9289922958, जगदलपुर: जिनदपाल हीरो 9289923084, दंतेवाड़ा: जय जिनय हीरो 9289922990, दल्लीराजहरा: लक्ष्मी हीरो 9289922983, भाटापारा: कुशल हीरो 9289923052, भिलाई: इंडियन हीरो 9289922355, चौहान मोटर्स 9289923017, दुर्ग: उत्सव हीरो 9289923014, उत्सव हीरो 7000595300, बिलासपुर: सत्या हीरो 9289922464, गैलेक्सी हीरो 9289922708, अंबिकापुर: आनंद हीरो 9289922369, सरगुजा हीरो 9289923110, कोरबा: शांति हीरो 9289922813, छत्तीसगढ़ हीरो 9289923067, रायगढ़: गोयल हीरो 9289922373, आदित्य हीरो 9289923081, जांजगीर: आनंद हीरो 9289922772, बैकुंठपुर: आर.के. हीरो 9289922812, जशपुर: आगाशा हीरो 9289922909.